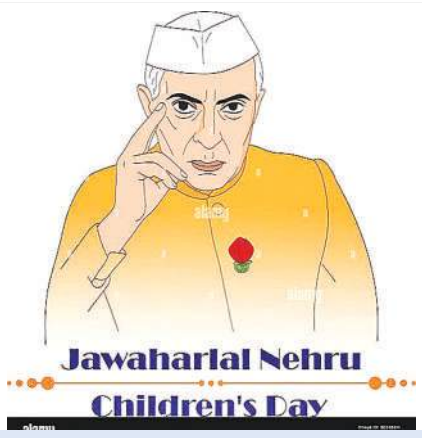
इंदौर, जबलपुर, कटनी, भोपाल, मंडला, मुंबई, दिल्ली, रायपुर, नरसिंहपुर, सिवनी से एक साथ प्रकाशित

yashbharat.co.in

नये जमाने के साथ..

यश भारत

• वर्ष- 1अंक-174 • इंदौर • शनिवार, 14 नवम्बर , 2026 • मूल्य- 2 रुपए • पृष्ठ-8 • कार्तिक शुक्ल पक्ष 5 •



काजीरंगा के पास भीषण सड़क हादसा

मिनी बस -कंटेनर भिड़े, 23 की मौत, 20 घायल





काजीरंगा, एजेंसी। असम में काजीरंगा नेशनल पार्क के पास शुक्रवार को भीषण सड़क हादसे में 23 लोगों की मौत हो गई, जबकि 20 अन्य घायल हो गए। हादसा राष्ट्रीय राजमार्ग-715 पर कोहोरा रेंज के अंतर्गत रंगाजन इलाके में हाथीकुली टी एस्टेट के पास हुआ। यहां यात्रियों से भरी एक मिनी बस और कंटेनर ट्रक के बीच आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि बस बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और कई यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना के बाद घटनास्थल पर चीख-पुकार मच गई। पुलिस और बचाव दल ने मौके पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया।

टक्कर इतनी भीषण थी कि मिनी बस बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और कई यात्री बस के अंदर ही फंस गए। राहत एवं बचाव दल ने बस को काटकर शवों को बाहर निकाला। शुरुआती जानकारी के मुताबिक बस में 35 से अधिक लोग सवार थे। मृतकों में दो महिलाएं भी शामिल हैं। गोलाघाट के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक स्वप्ननिल डेका ने बताया कि हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई थी। शुरुआत में 20 लोगों की मौत की जानकारी सामने आई थी, लेकिन राहत एवं बचाव कार्य के दौरान मृतकों की संख्या बढ़कर 23 हो गई। घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। कोहोरा मॉडल अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से घायल लोगों को बोकोखात और गोलाघाट के अस्पतालों में भेजा गया। कुछ घायलों को बेहतर उपचार के लिए जोरहाट मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल रेफर किया गया है। हादसे में कई कॉलेज के छात्र भी प्रभावित हुए हैं। बताया गया कि छात्र अपनी कक्षाएं समाप्त होने के बाद लौट रहे थे, तभी उनकी बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। जानकारी मिलते ही असम के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री अतुल बोरा घटनास्थल पर पहुंचे। वह इसी क्षेत्र के विधायक भी हैं। उन्होंने मौके पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्यों का जायजा लिया और अधिकारियों से घायलों के उपचार तथा बचाव अभियान की जानकारी ली। पुलिस के अनुसार दुर्घटना की प्रारंभिक जांच में मिनी बस की तेज रफ्तार सामने आई है। काजीरंगा नेशनल पार्क के आसपास वाहनों की गति को लेकर प्रतिबंध लागू हैं। आशंका है कि मिनी बस इन प्रतिबंधों का उल्लंघन करते हुए तेज गति से चल रही थी। इसी दौरान चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया और बस सामने से आ रहे कंटेनर ट्रक से जा भिड़ी।



23 वाहनों में लगी आग, 3 भारतीय समेत 14 की मौत

नई दिल्ली, एजेंसी। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के फुजैराह के पास भीषण सड़क हादसे में 14 लोगों की मौत हो गई, जबकि 30 अन्य घायल हो गए। मृतकों में भारतीय नागरिक भी शामिल हैं। हादसा उस समय हुआ, जब एक बेकाबू ट्रक ने कई वाहनों को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद कई गाड़ियों में आग लग गई और देखते ही देखते लपटों ने आसपास मौजूद वाहनों को भी अपनी चपेट में ले लिया। यूएई के आंतरिक मंत्रालय के मुताबिक, हादसा गुरुवार आधी रात से कुछ देर पहले पूर्वी अमीरात की ओर जाने वाली सड़क पर हुआ। उस समय यातायात धीमा था और कई वाहन आगे बढ़ने के लिए इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान एक ट्रक ने आगे चल रहे वाहन को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। इसके बाद पलटा हुआ ट्रक सड़क पर धीमी गति से चल रहे और रुके हुए कई वाहनों से जा भिड़ा। टक्कर इतनी जोरदार थी कि वाहनों में आग लग गई। आग तेजी से फैलने के कारण कई लोग गाड़ियों के भीतर फंस गए। हादसे में पांच ट्रकों सहित कुल 23 वाहन शामिल थे। आग लगते ही घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई। सूचना मिलने पर पुलिस, पैरामेडिकल और सिविल डिफेंस की टीमें मौके पर पहुंचीं। बचाव दल ने आग पर काबू पाने के साथ वाहनों में फंसे लोगों को बाहर निकाला। घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया।

छठ महापर्व शुरू

40 लाख श्रद्धालु बिहार लौटे 16 नवंबर को उगते सूर्य को अर्घ्य



नई दिल्ली,यशभारत। लोक आस्था का महापर्व छठ शुक्रवार से नहाय-खाय के साथ शुरू हो रहा है। चार दिनों तक चलने वाले इस महापर्व में व्रती भगवान सूर्य और छठी मैया की विधि-विधान से पूजा-अर्चना करेंगे। पर्व का समापन 16 नवंबर को उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ होगा। छठ को लेकर बिहार से लेकर दिल्ली, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश तक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। घाटों की साफ-सफाई, सजावट और सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए हैं।

छठ पर्व को लेकर देश के अलग-अलग राज्यों में रहने वाले बिहार के लोगों की घर वापसी का सिलसिला जारी है। दावा किया जा रहा है कि देशभर से करीब 40 लाख लोग बिहार लौट चुके हैं। पटना जंक्शन सहित राज्य के प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर पिछले पांच दिनों से यात्रियों की भारी भीड़ देखी जा रही है। गुजरात के सूरत से ही दो दिनों में करीब 60 हजार लोग अपने गृह नगरों के लिए रवाना हुए हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए गुजरात से 43 विशेष ट्रेनें चलाई जा रही हैं। हरियाणा के अंबाला कैंट सहित कई रेलवे स्टेशनों पर भी यूपी और बिहार जाने वाले यात्रियों की भीड़ उमड़ रही है।

दिल्ली में इस बार छठ पूजा के लिए मूनक नहर के दोनों किनारों पर करीब 11 किलोमीटर लंबा विशाल घाट विकसित किया गया है। गुरुवार को भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन ने इसका उद्घाटन किया। दिल्ली सरकार ने छठ पूजा के अवसर पर 16 नवंबर को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है। इस दिन सरकारी कार्यालयों, स्वायत्त निकायों और सार्वजनिक उपक्रमों में छुट्टी रहेगी। वहीं उत्तर प्रदेश सरकार ने छठ पूजा के अवसर पर 15 और 16 नवंबर को ऐच्छिक अवकाश घोषित किया है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में भी छठ पूजा को लेकर विशेष तैयारियां की गई हैं। यहां छोटे-बड़े 54 घाटों पर श्रद्धालुओं के लिए व्यवस्थाएं की गई हैं। बड़े तालाब के शीतलदास घाट सहित विभिन्न जलाशयों पर व्रती सूर्य को अर्घ्य देंगे। देश के अलग-अलग हिस्सों में रह रहे पूर्वांचल और बिहार के परिवारों में भी पर्व को लेकर उत्साह का माहौल है।

मणिपुर में उग्रवादियों की अंधाधुंध फायरिंग

दो महिलाओं समेत 4 की मौत

उखरुल, एजेंसी। मणिपुर के उखरुल जिले में शुक्रवार को उग्रवादियों ने दो वाहनों पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। इस हमले में दो महिलाओं समेत चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद इलाके में तनाव का माहौल बन गया है

पुलिस के मुताबिक, वारदात इम्फाल-उखरुल मार्ग पर न्यू हेवन इलाके में हुई। हमले के दौरान दोनों वाहनों में सवार लोगों को निशाना बनाया गया। फायरिंग इतनी भीषण थी कि वाहनों के आगे के शीशों पर गोलियों के निशान मिले हैं। मृतकों में दो पुरुष और दो महिलाएं शामिल हैं।इस घटना से एक दिन पहले भी मणिपुर के दो इलाकों में गोलीबारी की घटनाएं सामने आई थीं। कांगपोकपी जिले के ताफोउ कुकी गांव और सेनापति जिले के कैलेंगजांग के पास हुई फायरिंग में 42 वर्षीय एक कुकी महिला की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, जबकि दो पुरुष घायल हुए थे। लगातार हो रही हिंसक घटनाओं ने पहाड़ी जिलों में सुरक्षा व्यवस्था और सामुदायिक तनाव को लेकर चिंता बढ़ा दी है।इस साल फरवरी से अब तक पहाड़ी जिलों में कुकी और नागा समुदायों के बीच हुई झड़पों में कम से कम 50 लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं, मई 2023 में घाटी के मैतेई और पहाड़ी क्षेत्रों के कुकी समुदायों के बीच शुरू हुए जातीय संघर्ष का असर अब तक बना हुआ है। इस संघर्ष में अब तक कम से कम 306 लोगों की जान जा चुकी है, जबकि 49 लोग लापता बताए गए हैं। हजारों लोगों को अपना घर छोड़कर विस्थापित होना पड़ा है।

मेट्रो में आम यात्री की तरह सफर पर निकले पीएम मोदी, काउंटर से खरीदा



बेंगलुरु, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कर्नाटक दौरे के दौरान बेंगलुरु मेट्रो की पिंक लाइन का उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने मेट्रो स्टेशन के टिकट काउंटर से खुद टिकट खरीदा और मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के साथ मेट्रो में सफर किया। प्रधानमंत्री ने राज्य में करीब 15,600 करोड़ रुपए की विभिन्न विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शुभारंभ भी किया। उन्होंने कहा कि बेंगलुरु अब 100 किलोमीटर से अधिक मेट्रो नेटवर्क वाला देश का तीसरा शहर बन गया है। शाम को प्रधानमंत्री ने मैसूरु में कॉसमॉस प्लेनेटोरियम का उद्घाटन किया इससे पहले प्रधानमंत्री ने प्रशांति कुटीरम के स्वर्ण जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि कर्नाटक सदियों से योग और आध्यात्मिक साधना का प्रमुख केंद्र रहा है। इस धरती ने अनेक योग गुरुओं और विद्वानों को जन्म दिया है। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा में योग केवल शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन और संतुलित समाज का आधार है।प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में रेलवे, ऊर्जा सुरक्षा और सौर ऊर्जा के क्षेत्र में केंद्र सरकार की उपलब्धियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारतीय रेलवे अब गुलामी की सोच को पीछे छोड़कर आधुनिक सुविधाओं की ओर बढ़ रहा है। कर्नाटक के 60 से अधिक रेलवे स्टेशनों को अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकसित किया जा चुका है। इन स्टेशनों पर यात्रियों को एयरपोर्ट जैसी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। ऊर्जा सुरक्षा का जिक्र करते हुए मोदी ने कहा कि खाड़ी देशों में युद्ध जैसी परिस्थितियों के दौरान भारत को ऊर्जा क्षेत्र में पिछले एक दशक में उठाए गए कदमों का लाभ मिला है।

राहुल गांधी का पीएम मोदी पर फोन टैपिंग का आरोप, फिर दी बहस की चुनौती

नई दिल्ली, एजेंसी। राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर उनका फोन टैप कराने का आरोप लगाया है। शुक्रवार को इंस्टाग्राम पर आयोजित आस्क मी सेशन में राहुल गांधी ने अपना मोबाइल फोन दिखाते हुए दावा किया कि विदेशी फंडिंग और देश विरोधी गतिविधियों से जुड़े आरोपों के सबूत उनके फोन में मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जानते हैं कि उनका फोन टैप कराया जा रहा है। राहुल ने एक बार फिर प्रधानमंत्री मोदी को आमने-सामने बहस की चुनौती देते हुए कहा कि यदि दोनों के बीच सीधी बातचीत हो जाए तो नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। पिछले 12 दिनों में यह सातवीं बार है, जब राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री को सार्वजनिक बहस की चुनौती दी है।



इंस्टाग्राम सेशन के दौरान एक यूजर ने राहुल गांधी से पूछा कि प्रधानमंत्री मोदी आरोप लगाते हैं कि उन्हें विदेश से मदद मिल रही है, जबकि राहुल गांधी का कहना है कि प्रधानमंत्री विदेशी ताकतों के इशारे पर काम कर रहे हैं। इन दोनों दावों के समर्थन में क्या सबूत हैं? इस पर राहुल ने कहा कि उनके फोन में ही सभी आरोपों से जुड़े सबूत मौजूद हैं। उन्होंने दावा किया कि आमने-सामने की बहस में यह स्पष्ट हो जाएगा कि विदेशी ताकतों के इशारे पर कौन काम कर रहा है, देश विरोधी कौन है और कौन कब से ऐसी गतिविधियों में शामिल है। राहुल ने कहा कि उनके पास ऐसी कई अन्य जानकारियां भी हैं, जिनके बारे में वह जानते हैं और जो उनके मोबाइल फोन में मौजूद हैं। एक अन्य सवाल में पूछा गया कि भाजपा संसद में बहस की बात कर रही है, जबकि राहुल सार्वजनिक मंच पर बहस की मांग क्यों कर रहे हैं? इस पर उन्होंने आरोप लगाया कि संसद में कई मुद्दों पर बोलने की कोशिश करने के बावजूद उन्हें मौका नहीं दिया जाता और उनका माइक बंद कर दिया जाता है। राहुल ने किसान कानूनों, वोट चोरी, सावरकर, चीन, जनरल नरवणे की किताब और एप्स्टीन से जुड़े मुद्दों का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्हें इन विषयों पर संसद में अपनी बात रखने से रोका गया।

बागेश्वर धाम जा रहे यादव महासभा के लोगों को पुलिस ने हिरासत में लिया, समर्थकों ने दी लाठी-डंडों से स्वागत की चेतावनी

छतरपुर, एजेंसी। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के भगवान श्रीकृष्ण को लेकर दिए गए बयान पर विवाद गहराता जा रहा है। बयान के विरोध में बागेश्वर धाम पर तालाबंदी करने जा रहे यादव महासभा के करीब 200 लोगों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। यादव महासभा के सदस्यों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए रैली निकाली थी। उधर, यादव महासभा के विरोध की खबर मिलते ही पं. धीरेंद्र शास्त्री के समर्थक भी लामबंद हो गए और हाईवे पर लाठी-डंडे लेकर पहुंच गए। समर्थकों ने यादव महासभा के लोगों का जूतों और डंडों से स्वागत करने की चेतावनी तक दे डाली। शुक्रवार को दोनों पक्षों के आमने-सामने आने से इलाके में तनाव की स्थिति बन गई। हालात को देखते हुए पुलिस ने मोर्चा संभाला और यादव महासभा के लोगों को धाम की ओर बढ़ने से रोक दिया।



विवाद के बीच बागेश्वर धाम के शिष्य मंडल की ओर से शांति बनाए रखने की अपील भी की गई। शिष्य मंडल के सदस्य नीतेंद्र चौबे ने बताया कि पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने दुबई से संदेश भेजकर यादव समाज को अपना भाई बताया है। उन्होंने सभी से शांति और एकता बनाए रखने की अपील करते हुए यादव समाज के लोगों को बागेश्वर धाम आने और बालाजी के चरणों में अर्जी लगाने का न्योता दिया है। हालांकि, इस अपील के बावजूद बयान को लेकर विरोध और समर्थन का सिलसिला जारी है।

दरअसल, विवाद की शुरुआत 29 अक्टूबर को शिवपुरी जिले के करैरा में आयोजित कथा के दौरान पं. धीरेंद्र शास्त्री के बयान से हुई थी। कथा में भगवान राम और श्रीकृष्ण की तुलना करते हुए उन्होंने कहा था कि हमारे राम सीधे हैं और तुम्हारे कृष्ण टेढ़े। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के तीन स्थानों से टेढ़े होकर खड़े होने, बांसुरी बजाने और गाय चराने का उल्लेख करते हुए कहा था कि उनके ठाकुरजी की खोपड़ी भी टेढ़ी, नाम भी टेढ़ा और चलने-खड़े होने का अंदाज भी टेढ़ा है। इसके साथ ही उन्होंने भगवान राम के धनुष चलाने और श्रीकृष्ण के बांसुरी बजाने की तुलना की थी। इसी टिप्पणी को यादव समाज ने भगवान श्रीकृष्ण का अपमान बताते हुए आपत्ति जताई है। अब इस बयान को लेकर शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन सड़कों तक पहुंच गया है और दोनों पक्षों के समर्थकों के आमने-सामने आने से कानून-व्यवस्था की चुनौती खड़ी हो गई है।

पीओके में यात्री वैन नदी में गिरी, 11 लोगों की मौत



इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र में यात्री वैन के नदी में गिरने से 11 लोगों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य घायल हुए हैं। हादसा उस समय हुआ, जब वैन गिलगित से घिजर जिले की यासीन घाटी जा रही थी। मृतकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। डॉन अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, हादसा गुरुवार शाम मोर्काह पुल के पास हुआ। इसी दौरान चालक ने वाहन से नियंत्रण खो दिया और वैन यासीन नदी में जा गिरी। दुर्घटना के बाद बचाव दल को मौके पर बुलाया गया। बचावकर्मियों ने नदी से 10 यात्रियों के शव निकाले। इनमें दो महिलाएं शामिल थीं। इसके अलावा तीन घायलों को भी बाहर निकाला गया। घायलों में एक बच्चा भी था। सभी को उपचार के लिए गुपिस सिविल अस्पताल पहुंचाया गया। पुलिस के मुताबिक, उपचार के दौरान गंभीर रूप से घायल बच्चे की भी मौत हो गई। इसके बाद हादसे में मरने वालों की संख्या बढ़कर 11 हो गई। दो अन्य घायलों का इलाज किया जा रहा है। मृतक और घायल सभी यासीन घाटी के निवासी बताए गए हैं।

ऑक्सीजन टैंकर में भीषण विस्फोट धमाके से ट्रक के उड़े परखच्चे

ग्वालियर, यशभारत। शहर के पिंटू पार्क औद्योगिक क्षेत्र में शुक्रवार को ऑक्सीजन टैंकर में हुए भीषण विस्फोट से इलाके में अफरा-तफरी मच गई। शिवा कंप्रेस्ड एयर प्रोडक्ट फैक्ट्री परिसर में खड़े टैंकर में धमाका इतना जोरदार था कि उसके साथ ही पास में खड़े ट्रक के भी परखच्चे उड़ गए। विस्फोट की आवाज दूर-दूर तक सुनाई दी। अचानक हुए धमाके से आसपास की कॉलोनियों में रहने वाले लोग दहशत में आ गए और जान बचाने के लिए अपने घरों से बाहर निकल आए। कई परिवारों के कॉलोनी छोड़कर बाहर भागने की भी जानकारी सामने आई है।प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, धमाके की आवाज इतनी तेज थी कि आसपास के लोग कुछ देर के लिए सहम गए। विस्फोट के बाद फैक्ट्री परिसर में टैंकर और ट्रक के क्षतिग्रस्त हिस्से दूर-दूर तक बिखर गए। घटनास्थल पर मलबा फैल गया। धमाके की सूचना मिलते ही आसपास के लोग बड़ी संख्या में मौके पर पहुंचने लगे, लेकिन दोबारा विस्फोट की आशंका को देखते हुए लोग घटनास्थल से दूरी बनाए रहे।बताया जा रहा है कि जिस फैक्ट्री में यह हादसा हुआ, वह रिहायशी इलाके के नजदीक स्थित है। ऐसे में इस घटना ने औद्योगिक इकाइयों में सुरक्षा इंतजामों और आबादी के आसपास संचालित होने वाली गैस एवं ऑक्सीजन संबंधी फैक्ट्रियों की निगरानी पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय लोगों में इस बात को लेकर भी चिंता है कि यदि विस्फोट की तीव्रता कुछ और अधिक होती या आसपास के आवासीय क्षेत्र तक इसका असर पहुंचता तो बड़ा नुकसान हो सकता था।



कटनी की चोरी : प्रदेश की 5 बड़ी चोरियों में से एक



कटनी, यशभारत। *मध्य प्रदेश में करोड़ों की बड़ी चोरियों के इतिहास में अब कटनी का नाम भी प्रमुखता से जुड़ गया है। बरगवां स्थित 'किसना ज्वेलर्स' शोरूम की 9 इंच मोटी दीवार काटकर 12 से 15 करोड़ रुपये के जेवरात उड़ा ले जाने की सनसनीखेज वारदात ने पूरे प्रदेश की सुरक्षा व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया है। यह वारदात इतनी बड़ी है कि इसने मध्य प्रदेश की अब तक की सबसे बड़ी और चर्चित चोरियों की फेहरिस्त में जगह बना ली है। कटनी की इस घटना के संदर्भ में आइए जानते हैं प्रदेश की उन 5 सबसे बड़ी चोरियों के बारे में, जहाँ शातिर चोरों ने बिना किसी हथियार के बल पर, केवल सेंधमारी और चकमा देकर करोड़ों के माल पर हाथ साफ किया।*

अब तक इन वारदातों ने झकझोरा मध्य प्रदेश को

1. भोपाल राज्य संग्रहालय की चोरी (लगभग 15 करोड़ रुपये)

- कब और कहाँ: सितंबर 2024, श्यामला हिल्स, भोपाल। वारदात का तरीका: एक शातिर चोर टिकट लेकर आम पर्यटक की तरह संग्रहालय में दाखिल हुआ और अंदर छिप गया। शाम को संग्रहालय बंद होने के बाद उसने गुप्त काल से लेकर नवाबी दौर तक के बेशकीमती प्राचीन सोने-चांदी के सिक्के और आभूषण समेट लिए, जिनकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब 15 करोड़ रुपये आंकी गई।
- * अंजाम: भागने के चक्कर में आरोपी 25 फीट ऊँची दीवार से कूदा जिससे उसका पैर टूट गया और वह पुलिस के हत्थे चढ़ गया, जिससे पूरा खजाना बरामद हो सका।

2. कटनी के किसना ज्वेलर्स शोरूम में सेंधमारी (12 से 15 करोड़ रुपये)

- कब और कहाँ: नवंबर 2026, बरगवां (माधवनगर), कटनी।
- वारदात का तरीका: चोरों ने शोरूम के पीछे स्थित पहाड़ी और सुनसान खदान का फायदा उठाकर 9 इंच मोटी दीवार में छेद (सेंध) किया। अंदर घुसते ही उन्होंने सीसीटीवी का डीवीआर बंद कर दिया और गैस कटर व औजारों की मदद से शोरूम के लगभग सारे सोने व हीरे के जेवरात साफ कर दिए। बाहर गार्ड तैनात होने के बावजूद बिना किसी का सामना किए चोर माल लेकर फरार हो गए।

3. जबलपुर का 'पायल वाला' गोल्ड शोरूम कांड (करीब 5.5 करोड़ रुपये)

- कब और कहाँ: अगस्त 2022, गोलबाजार, जबलपुर।
- वारदात का तरीका: कर्ज में डूबे एक स्थानीय कारोबारी ने अपने साथियों के साथ मिलकर एक महीने तक शोरूम की रेकी की। रात के समय चोरों ने शोरूम के 10 ताले काटे, सीसीटीवी डीवीआर उखाड़ा और दो घंटे तक इत्मीनान से 10 किलो से अधिक सोने के गहने बोरियों में भर लिए। बाद में पुलिस ने पूरे गिरोह को पकड़कर शत-प्रतिशत जेवर बरामद कर लिए थे।

4. उज्जैन एसबीआई लॉकर चोरी (करीब 5 करोड़ रुपये)

- कब और कहाँ: सितंबर 2025, महानंदा नगर, उज्जैन।
- वारदात का तरीका: मास्टरमाइंड चोर ने बेहद शातिराना तरीके से बैंक की सुरक्षा व्यवस्था को चकमा देकर रात के अंधेरे में स्ट्रांग रूम और लॉकर से नकदी व सोने के आभूषणों पर हाथ साफ किया। उज्जैन पुलिस की विशेष टीम ने तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर इस हाई-प्रोफाइल चोरी का पर्दाफाश किया था।

5. सतना के 'जैन ज्वेलर्स' शोरूम में सेंधमारी (करीब 3.5 करोड़ रुपये)

- कब और कहाँ: जुलाई 2023, सिटी कोतवाली क्षेत्र, सतना।
- वारदात का तरीका: चोरों ने शोरूम की छत और दीवार काटकर भीतर प्रवेश किया। उन्होंने गैस कटर की मदद से तिजोरी काटी और करीब 5 किलो सोना व हीरे के जेवरात चुरा ले गए। पुलिस ने कई राज्यों में दबिश देकर इस अंतरराज्यीय गिरोह को पकड़ा था।

रेलवे आरएसी टिकट व्यवस्था खत्म करने पर कर रहा विचार

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय रेलवे यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आरएसी (रिजर्वेशन अगेंस्ट कैंसलेशन) टिकट व्यवस्था में बदलाव करने पर विचार कर रहा है। इस व्यवस्था को खत्म करने की संभावना भी तलाशी जा रही है। यदि ऐसा होता है तो लाखों रेल यात्रियों को राहत मिल सकती है। फिलहाल आरएसी टिकट के तहत एक ही बर्थ पर दो यात्रियों को सफर करने की अनुमति दी जाती है। रेलवे में जब आरक्षित सीटों की मांग बढ़ जाती है और सभी यात्रियों को पूरी बर्थ उपलब्ध नहीं हो पाती, तब आरएसी टिकट जारी किए जाते हैं। इस व्यवस्था में दो यात्रियों को एक ही बर्थ पर बैठकर यात्रा करनी पड़ती है। दोनों यात्रियों को आधी-आधी जगह मिलती है। रात के समय उन्हें इसी सीमित जगह में सोना पड़ता है, जिससे लंबी दूरी की यात्रा में काफी परेशानी होती है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, यात्रियों की सुविधा से जुड़ी चिंताओं के चलते रेलवे इस व्यवस्था की समीक्षा कर रहा है। रेलवे अधिकारियों का मानना है कि जब किसी यात्री को सोने के लिए पूरी बर्थ उपलब्ध नहीं होती, तो उससे पूरी यात्रा का किराया लेना उचित नहीं है। इसी आधार पर मौजूदा नियम में बदलाव की जरूरत महसूस की जा रही है।



भाईदूज पर जेलों में गूंजा भाई-बहन के प्रेम का उल्लास

6 हजार बंदियों से मिले 20 हजार परिजन, खुली मुलाकात की विशेष व्यवस्था

भोपाल, यश भारत।

भाईदूज के अवसर पर प्रदेश की जेलों में बंदियों को अपने परिजनों के साथ त्योहार मनाने का अवसर मिला। जेल महानिदेशक वरुण कपूर की पहल पर प्रदेश की तीन केंद्रीय जेलों ग्वालियर सागर एवं सर्किल जेल शिवपुरी सहित इनके अधीनस्थ जेलों में विशेष खुली मुलाकात का आयोजन किया गया। इस दौरान बड़ी संख्या में बहनें अपने बंदी भाइयों से मिलने पहुंचीं। उन्होंने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर उनकी सुख-समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। वहीं महिला बंदियों से मिलने उनके भाई और अन्य परिजन भी पहुंचे। लंबे समय बाद परिवार के सदस्यों और छह वर्ष तक की उम्र के बच्चों से मिलकर बंदियों के चेहरे खिल उठे। कई जगह भावुक मिलन के दौरान खुशी के आंसू भी छलक पड़े। जेल प्रशासन ने इस आयोजन के लिए विशेष इंतजाम किए थे। बंदियों और परिजनों की सुविधा के लिए जेल परिसर के खुले स्थानों में मुलाकात की व्यवस्था की गई। सुरक्षा और निगरानी के बीच पूरा आयोजन शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। प्रदेशभर में करीब 6 हजार बंदियों से लगभग 20 हजार परिजनों ने मुलाकात की। इस पहल को बंदियों के पारिवारिक और भावनात्मक जुड़ाव को बनाए रखने तथा उनके सुधार और पुनर्वास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।



मुंबई से रक्सौल के लिए वन-वे स्पेशल ट्रेन 13 नवंबर को होगी रवाना

भोपाल ,यश भारत। त्योहारी सीजन में यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए रेलवे ने लोकमान्य तिलक टर्मिनस (मुंबई) से रक्सौल के बीच वन वे स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। गाड़ी संख्या 01031 लोकमान्य तिलक टर्मिनस रक्सौल स्पेशल 13 नवंबर को मुंबई से रवाना होकर भोपाल मंडल के इटारसी स्टेशन से गुजरेगी। ट्रेन 13 नवंबर की रात 11:20 बजे इटारसी पहुंचेगी और पांच मिनट के ठहराव के बाद 11:25 बजे रवाना होगी। यह 15 नवंबर को रात 1:25 बजे रक्सौल पहुंचेगी। ट्रेन का ठहराव ठाणे, कल्याण, नासिक रोड, भुसावल, खंडवा, इटारसी, जबलपुर, कटनी, सतना, प्रयागराज छिवकी, बक्सर, आरा, पाटलिपुत्र, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर सहित अन्य स्टेशनों पर रहेगा। ट्रेन में कुल 20 एलएचबी कोच होंगे। यात्रियों को समय-सारणी की जानकारी एनटीईएस ऐप या हेल्पलाइन 139 से मिलेगी।



भीमनगर बस्ती में बच्चों के साथ दीपावली की खुशियां बांटने पहुंचे जीतू पटवारी

बच्चों से किया संवाद, मिठास और मुस्कान के साथ मनाया दीपावली मिलन समारोह

भोपाल,यश भारत। मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महासचिव अमित शर्मा द्वारा भीमनगर बस्ती में आयोजित दीपावली मिलन समारोह में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने बस्ती के बच्चों के साथ समय बिताया और दीपावली की खुशियां साझा कीं। पटवारी ने बच्चों से संवाद कर उन्हें त्योहार की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि त्योहारों की असली खुशी तभी है जब समाज के हर वर्ग के साथ मिलकर खुशियां बांटी जाएं। प्रेम भाईचारे और आपसी सौहार्द से ही त्योहारों का महत्व बढ़ता है। बच्चों के साथ दीपावली मनाने का उद्देश्य उनके चेहरों पर मुस्कान लाना और समाज में अपनत्व का भाव मजबूत करना है। कार्यक्रम में भोपाल शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रवीण सक्सेना और भोपाल ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष अनोखी पटेल सहित कांग्रेस के अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे। समारोह में सामाजिक एकजुटता और सद्भाव का संदेश दिया गया।



एम्स भोपाल में सहायक प्रोफेसर के 45 पदों पर भर्ती

वेतन बढ़ाकर 1.90 लाख रुपए प्रतिमाह किया, आवेदन की अंतिम तिथि सात दिन बढ़ाई

भोपाल,यश भारत। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) भोपाल ने विभिन्न विभागों में संविदा आधार पर सहायक प्रोफेसर के 45 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। संस्थान ने भर्ती प्रक्रिया के तहत महत्वपूर्ण संशोधन करते हुए चयनित अभ्यर्थियों का मासिक पारिश्रमिक बढ़ाकर 1 लाख 90 हजार रुपए कर दिया है। इन पदों पर सामान्य चिकित्सा कार्डियोलॉजी, बर्न्स एवं प्लास्टिक सर्जरी मेडिकल जेनेटिक्स और पीडियाट्रिक सर्जरी सहित विभिन्न विभागों में नियुक्तियां की जाएंगी। एम्स प्रशासन ने आवेदन की अंतिम तिथि भी बढ़ा दी है। अब इच्छुक और पात्र अभ्यर्थी संस्थान की वेबसाइट पर शुद्धिपत्र प्रकाशित होने की तारीख से सात दिनों के भीतर आवेदन कर सकेंगे।

किसान कल्याण वर्ष में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी की बड़ी उपलब्धि

पांच रुपये में 1.33 लाख किसानों को मिले कृषि पंप कनेक्शन

भोपाल, यश भारत।

किसान कल्याण वर्ष 2026 के तहत मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने किसानों को बड़ी राहत दी है। कंपनी के कार्यक्षेत्र के भोपाल नर्मदापुरम ग्वालियर और चंबल संभाग के 16 जिलों में अब तक 1 लाख 33 हजार 149 किसानों को मात्र पांच रुपये के प्रारंभिक शुल्क पर नए स्थाई कृषि पंप बिजली कनेक्शन दिए जा चुके हैं। कंपनी के अनुसार भोपाल रीजन के आठ जिलों के 9 305 गांवों में 1 लाख 1 हजार 942 किसानों ने, जबकि ग्वालियर रीजन के आठ जिलों के 7 284 गांवों में 31 हजार 207 किसानों ने योजना का लाभ लिया है।योजना के तहत बिजली लाइन के नजदीक खेतों वाले किसानों को पांच रुपये में कनेक्शन दिया जा रहा है। शेष राशि का भुगतान मासिक बिजली बिल के साथ किश्तों में किया जा सकता है। इच्छुक किसान अधिक जानकारी के लिए नजदीकी बिजली कार्यालय या हेल्पलाइन नंबर 1912 पर संपर्क कर सकते हैं।



भोपाल का स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स अंतरराष्ट्रीय हॉकी मानचित्र पर चमका

भोपाल , यश भारत। खेल मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश खेलों के क्षेत्र में लगातार नई उपलब्धियां हासिल कर रहा है। भोपाल के नाथू बरखेड़ा स्थित अंतरराष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स को इंटरनेशनल हॉकी फेडरेशन से कैटेगरी 1 प्रमाण पत्र मिलना प्रदेश के लिए बड़ी उपलब्धि है। देश में हैदराबाद के बाद भोपाल दूसरा शहर है जिसे यह प्रमाण पत्र मिला है। इसी परिसर में 19 नवंबर से एशियन महिला हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी आयोजित होगी।

सोनिया गांधी की किताब पर सारंग का निशाना, फारूक के बयान पर बोले- यह मोदी सरकार का प्रभाव–सोनिया गांधी की पुस्तक पर प्रियंका गांधी के बयान को लेकर सारंग ने कहा कि किताब के जरिए राहुल गांधी को स्थापित करने की नाकाम कोशिश की गई है। वहीं, फारूक अब्दुल्ला के कश्मीर को भारत का हिस्सा बताने वाले बयान पर उन्होंने कहा कि यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों का प्रभाव है। धारा 370 हटने से कश्मीर के विकास को नई दिशा मिली है।

उमंग सिंघार ने पढ़ी सोनिया गांधी की पुस्तक ए जर्नी ऑफ लव जीवन के अनकहे पहलुओं को जाना

प्रेम, संघर्ष, कर्तव्य और भारत से जुड़ाव की संवेदनशील कहानी को व्यक्तिगत अनुभवों के जरिए समझने का अवसर

भोपाल, यश भारत।

कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी की पुस्तक ए जर्नी ऑफ लव इन दिनों चर्चा में है। इस पुस्तक को मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने भी पढ़ा। पुस्तक के माध्यम से उन्होंने सोनिया गांधी के जीवन के उन अनकहे पहलुओं को जानने का अवसर पाया जिनमें प्रेम संघर्ष कर्तव्य विरह और भारत के प्रति उनके गहरे जुड़ाव की झलक मिलती है। ए जर्नी ऑफ लव केवल एक साहित्यिक कृति नहीं बल्कि व्यक्तिगत अनुभवों के जरिए जीवन और इतिहास को समझने का एक संवेदनशील प्रयास है। पुस्तक में सोनिया गांधी के जीवन के अनुभवों के साथ देश की बदलती राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का भी उनके नजरिए से चित्रण किया गया है।

पुस्तक में ऐसे कई अनुभवों और परिस्थितियों का उल्लेख है जिन्होंने सोनिया गांधी के व्यक्तित्व उनके जीवन के फैसलों और भारत के साथ उनके रिश्ते को आकार दिया। यह पाठकों को इतिहास को केवल घटनाओं के क्रम में नहीं बल्कि उसे करीब से देखने और जीने वाले व्यक्ति के अनुभवों के माध्यम से समझने का अवसर देती है।

उमंग सिंघार द्वारा इस पुस्तक का अध्ययन सोनिया गांधी के जीवन के व्यक्तिगत और सार्वजनिक पक्षों को जानने की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।



बाजार से हटेगी प्रतिबंधित क्रीम, सप्लाई चेन की होगी जांच

भोपाल में पाकिस्तानी फेयरनेस क्रीम की बिक्री पर सख्ती

भोपाल,यश भारत।

शहर में पाकिस्तानी फेयरनेस क्रीम की खुलेआम बिक्री के मामले में मंत्री विश्वास सारंग ने सख्त रुख अपनाया है। उन्होंने प्रशासन को मामले में कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। सारंग ने कहा कि महाराष्ट्र में इस क्रीम पर प्रतिबंध लगाया जा चुका है। इसके बावजूद भोपाल के बाजारों में इसकी बिक्री गंभीर मामला है। मंत्री ने स्पष्ट किया कि भोपाल में भी इस क्रीम को बाजार से हटाया जाएगा। साथ ही इसकी सप्लाई चेन की पूरी जानकारी जुटाई जाएगी। जांच के जरिए यह पता लगाया जाएगा कि प्रतिबंधित उत्पाद बाजार तक कैसे पहुंच रहा है और इसकी आपूर्ति किन माध्यमों से की जा रही है। उन्होंने प्रशासन को निर्देश दिए हैं कि मामले की गंभीरता से जांच कर आवश्यक कार्रवाई की जाए ताकि प्रतिबंधित उत्पाद की बिक्री पर रोक लगाई जा सके।





एम्स भोपाल में टीकाकरण के महत्व पर हुआ मंथन

विशेषज्ञों ने वयस्कों और ऑटोइम्यून मरीजों के टीकाकरण की बताई उपयोगिता

भोपाल,यश भारत। एम्स भोपाल के जनरल मेडिसिन विभाग की ओर से विश्व टीकाकरण दिवस पर जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से शैक्षणिक वैज्ञानिक सत्र आयोजित किया गया। एकेडमिक ब्लॉक स्थित मेडिसिन सेमिनार हॉल में हुए इस कार्यक्रम में विभिन्न आयु वर्गों में टीकाकरण की भूमिका और बीमारियों की रोकथाम पर चर्चा की गई। विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. सीमा पी. महंत ने टीकाकरण के महत्व और वर्तमान चिकित्सा पद्धति में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इस दौरान डॉ. शुभम रायकवार ने वयस्क टीकाकरण पर अपडेट और डॉ. गोविंद ने ऑटोइम्यून बीमारियों में टीकाकरण पर अपडेट' विषय पर व्याख्यान दिया।विशेषज्ञों ने वयस्कों और ऑटोइम्यून बीमारियों से पीड़ित मरीजों के लिए टीकाकरण की उपयोगिता बताई। साथ ही साक्ष्य आधारित टीकाकरण को बढ़ावा देकर संक्रमण से बचाव और जनस्वास्थ्य में सुधार पर जोर दिया।

रोजगार और अधिकारों की मांग को लेकर तीन दिवसीय महाआंदोलन, नीलम पार्क में जुटेंगे प्रदेशभर के स्वास्थ्यकर्मी

बेरोजगार कोरोना योद्धा 16 नवंबर से भोपाल में करेंगे प्रदर्शन

भोपाल,यश भारत।

मध्यप्रदेश के बेरोजगार कोरोना योद्धा अपनी लंबित मांगों को लेकर 16 नवंबर से भोपाल में तीन दिवसीय विशाल प्रदर्शन एवं महाआंदोलन करेंगे। कोविड 19 आयुष चिकित्सक संघ एवं पैरामेडिकल स्टाफ के तत्वावधान में यह आंदोलन 16, 17 और 18 नवंबर 2026 को नीलम पार्क में आयोजित होगा। आयोजन के माध्यम से कोरोना काल में सेवाएं देने वाले आयुष चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल कर्मचारियों के रोजगार अधिकार और सम्मान से जुड़े मुद्दे उठाए जाएंगे। साथ ही प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्थाओं में सुधार की मांग भी की जाएगी। संघ ने प्रदेशभर के बेरोजगार कोरोना योद्धाओं से आंदोलन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की है। संगठन का कहना है कि कोरोना महामारी के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं में योगदान देने वाले कर्मचारियों की मांगों को लेकर एकजुट होकर आवाज उठाई जाएगी। प्रदेश संयोजक डॉ. अंकित असाटी ने सभी कोरोना योद्धाओं से भोपाल पहुंचकर आंदोलन में सहभागिता करने का आह्वान किया है।



छठ घाटों पर व्यवस्थाओं का जायजा लेने पहुंचे विधायक भगवानदास सबनानी

महापौर मालती राय और भाजपा जिलाध्यक्ष रविंद्र यती रहे मौजूद

भोपाल,यश भारत।

लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा की तैयारियों को लेकर दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक भगवानदास सबनानी ने गुरुवार को शहर के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया। इस दौरान महापौर मालती राय और भाजपा जिलाध्यक्ष रविंद्र यती भी मौजूद रहे। जनप्रतिनिधियों ने शीतल दास की बगिया, प्रेमपुरा पुलिस लाइन नेहरू नगर और 5 नंबर स्टॉप स्थित छठ घाटों पर पहुंचकर साफ-सफाई प्रकाश व्यवस्था सुरक्षा और श्रद्धालुओं की सुविधाओं का जायजा लिया। विधायक सबनानी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घाटों पर आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा में कोई कमी न रहे। उन्होंने सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पर्व से पहले पूरी करने को कहा ताकि श्रद्धालुओं को परेशानी न हो। निरीक्षण के दौरान मंडल अध्यक्ष हेमंत बड़गैया मुकेश दहाड़े भोजपुरी समाज के वरिष्ठजन और नगर निगम के संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।



एनएसयूआई ने कुलपति को सौंपा ज्ञापन, परीक्षा और प्रैक्टिकल नहीं कराने की भी रखी मांग

छठ महापर्व पर 16 नवंबर को आरजीपीवी में अवकाश की मांग

भोपाल,यश भारत।

छठ महापर्व के अवसर पर 16 नवंबर 2026 को राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (आरजीपीवी) और उससे संबद्ध महाविद्यालयों में अवकाश घोषित करने की मांग उठी है। इस संबंध में एनएसयूआई भोपाल जिला अध्यक्ष अक्षय तोमर और जिला महासचिव अनिमेष गोंडली ने कुलपति प्रो. डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव को ज्ञापन सौंपा। एनएसयूआई प्रदेश उपाध्यक्ष रवि परमार ने बताया कि बिहार उत्तर प्रदेश और झारखंड सहित कई राज्यों में छठ महापर्व का विशेष महत्व है। मध्यप्रदेश के शैक्षणिक संस्थानों में भी इन राज्यों के बड़ी संख्या में विद्यार्थी पढ़ाई कर रहे हैं। 16 नवंबर को उषा अर्घ्य और पारण के साथ पर्व का मुख्य अनुष्ठान संपन्न होगा। जिला अध्यक्ष अक्षय तोमर ने मांग की कि विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग (यूटीड़ी) और सभी संबद्ध कॉलेजों में अवकाश घोषित किया जाए। इस दिन परीक्षा प्रैक्टिकल और वाइवा भी नहीं कराए जाएं। पूर्व निर्धारित परीक्षाओं को अन्य तिथि पर कराने की मांग की गई है। एनएसयूआई ने प्रशासन से जल्द सकारात्मक निर्णय लेने की अपील की है।



"हम शांत हैं कमजोर नहीं..." -राज ठाकरे

छठपूजा के बहाने महाराष्ट्र में आग लगाने की कोशिश, भाजपा पर सियासी रोटियां सेंकने का आरोप

मुंबई, यशभारत। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के अध्यक्ष राज ठाकरे ने छठपूजा और मराठी-हिंदी विवाद को लेकर भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा छठपूजा के मुद्दे का इस्तेमाल कर महाराष्ट्र में भाषाई और सांस्कृतिक संघर्ष पैदा करने की कोशिश कर रही है। आगामी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव की पृष्ठभूमि में जानबूझकर भाषाई विवाद को हवा दी जा रही है।



राज ठाकरे ने कहा कि पिछले वर्ष मुंबई महानगरपालिका चुनाव के दौरान कबूतरखाने के मुद्दे पर गुजराती और मराठी समाज के बीच विवाद पैदा किया गया था। भाजपा चुनाव जीतने के लिए दो समुदायों के बीच संघर्ष करवाने की राजनीति करती है। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर छठपूजा से जुड़े वीडियो और रील प्रसारित किए जा रहे हैं। मुंबई के कुछ रेलवे स्टेशनों पर भोजपुरी गाने बजाकर भी विवाद खड़ा करने का प्रयास किया गया।

उन्होंने मराठी समाज से अपील की कि वह भाजपा के बनाए विवादों के जाल में न फंसे, बल्कि सतर्क रहे। उन्होंने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज की गुरिल्ला युद्धनीति को याद रखते हुए उचित समय पर जवाब दिया जाएगा।

राज ठाकरे ने चेतावनी देते हुए कहा कि महाराष्ट्र को लूटने और उसकी सांस्कृतिक पहचान बिगाड़ने वालों को यह नहीं भूलना चाहिए कि हम शांत हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि कमजोर हैं। उन्होंने उत्तर भारतीयों और गुजराती समाज से भी ऐसी राजनीति से सावधान रहने की अपील की।

छठ विवाद के बीच सोनू सूद की एंट्री

15 नवंबर को जुहू बीच पर श्रद्धालुओं संग मनाएंगे महापर्व, सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर दिया न्योता

मुंबई, यशभारत। मुंबई में समुद्र किनारों पर छठ पूजा के आयोजन को लेकर जारी विवाद के बीच बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद ने बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने 15 नवंबर को जुहू बीच पर श्रद्धालुओं के साथ छठ महापर्व मनाने की घोषणा की है। इसके साथ ही सोशल मीडिया पर वीडियो साझा कर लोगों को पूजा में शामिल होने का न्योता दिया है।

सोनू सूद के मुताबिक, 15 नवंबर 2026 की शाम जुहू बीच पर होटल पाम ग्रोव के पीछे छठ पूजा का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से इस



पावन पर्व में शामिल होने की अपील की है। उनका यह ऐलान ऐसे समय में आया है, जब मुंबई के समुद्र तटों पर छठ पूजा आयोजित करने को लेकर राजनीतिक विवाद गहराया हुआ है।

दरअसल, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने समुद्र किनारों पर छठ पूजा के आयोजन का विरोध किया है। पार्टी का तर्क है कि इससे समुद्र तटों की स्वच्छता और सुंदरता प्रभावित होती है। साथ ही आयोजनों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी सवाल उठाए गए हैं।

दूसरी ओर, भाजपा ने मनसे के विरोध पर निशाना साधा है। भाजपा नेताओं का आरोप है कि राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक आयोजनों का विरोध किया जा रहा है। हर साल मुंबई में बड़ी संख्या में उत्तर भारतीय श्रद्धालु समुद्र किनारों पर छठ पूजा करते हैं। ऐसे में सोनू सूद के जुहू बीच पहुंचने के ऐलान ने इस विवाद को एक बार फिर सुर्खियों में ला दिया है।

मंत्री के बंगले में आग से जागी सरकार

वनमंत्री गणेश नाईक ने मुख्य सचिव को लिखा पत्र

मंत्रालय से मंत्रियों के सरकारी आवासों तक अग्नि सुरक्षा जांच की मांग



मुंबई, यशभारत। महाराष्ट्र के वनमंत्री गणेश नाईक के दक्षिण मुंबई के नरीमन पॉइंट स्थित सरकारी बंगले के ड्राइंग रूम में आग लगने की घटना के बाद सरकारी इमारतों की अग्नि सुरक्षा का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में आ गया है। राहत की बात यह है कि इस घटना में कोई जनहानि नहीं हुई। हालांकि, इस घटना को गंभीरता से लेते हुए नाईक ने राज्य के मुख्य सचिव राजेश अग्रवाल से मंत्रालय सहित पूरे महाराष्ट्र की सरकारी इमारतों और मंत्रियों के सरकारी बंगलों का तत्काल फायर ऑडिट कराने की मांग की है। मुंबई के मलबार हिल और नरीमन पॉइंट इलाके में कई मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सरकारी आवास हैं। ऐसे में इन इमारतों की अग्नि सुरक्षा व्यवस्था की नए सिरे से जांच जरूरी मानी जा रही है।

गौरतलब है कि करीब 14 साल पहले मंत्रालय में भीषण आग लगने की घटना हुई थी। इसके बाद सरकारी संपत्तियों का फायर ऑडिट अनिवार्य किया गया था। इसके बावजूद मंत्री के बंगले में आग लगने से सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े हो गए हैं।

प्रस्तावित जांच में बिजली के तारों, अग्निशमन उपकरणों, पानी की उपलब्धता, धुआं पहचानने वाले यंत्रों और आपातकालीन निकासी मार्गों की जांच शामिल होनी चाहिए। साथ ही सरकारी बंगलों के आसपास सूखे पेड़ों और ज्वलनशील कचरे से पैदा होने वाले खतरों का भी आकलन जरूरी है।

दिवाली की चमक के बाद कचरे का अंबार

पांच दिनों में 443 मीट्रिक टन अतिरिक्त कचरा जमा, पटाखों के अवशेष और गिफ्ट पैकिंग ने बढ़ाया बोझ

मुंबई, यशभारत। दिवाली के त्योहार के बाद मुंबई में कचरे का बोझ बढ़ गया है। बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) ने दिवाली के पांच दिनों में शहर से 443 मीट्रिक टन अतिरिक्त कचरा एकत्र किया। इसमें पटाखों के अवशेष, मिठाइयों के डिब्बे, उपहारों के बॉक्स और पैकिंग में इस्तेमाल होने वाली सामग्री प्रमुख रूप से शामिल है।

बीएमसी के आंकड़ों के मुताबिक, 7 से 11 नवंबर के बीच मुंबई में कुल 36,445 मीट्रिक टन कचरा जमा हुआ, जबकि सामान्य दिनों में इसी अवधि के दौरान



करीब 36,002 मीट्रिक टन कचरा निकलने का अनुमान था। इस तरह दिवाली के कारण कचरे की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

इस अतिरिक्त कचरे को उठाने और निर्धारित केंद्रों तक पहुंचाने के लिए बीएमसी को विशेष व्यवस्था करनी पड़ी। इन पांच दिनों में कचरे के परिवहन के लिए 6,787 चक्कर लगाए गए। 7 नवंबर को सबसे अधिक 7,810 मीट्रिक टन कचरा एकत्र हुआ। एकत्रित कचरे को कांजुरमार्ग स्थित प्रसंस्करण केंद्र भेजा गया। दिवाली के बाद बढ़े कचरे ने शहर की सफाई व्यवस्था और पर्यावरण संरक्षण को लेकर नई चुनौती खड़ी कर दी है।

अजीतदादा के निधन के बाद राष्ट्रवादी के विलय का अध्याय समाप्त -सुप्रिया सुले



मुंबई, यशभारत। राष्ट्रवादी कांग्रेस के शरद पवार और अजीत पवार गुट के विलय को लेकर चल रही चर्चाओं पर सांसद सुप्रिया सुले ने विराम लगा दिया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अजीत पवार के जीवित रहते दोनों राष्ट्रवादी गुटों को एकजुट करने और विलय को लेकर बातचीत चल रही थी, लेकिन उनके निधन के बाद यह विषय समाप्त हो गया। सुप्रिया सुले ने भावुक होते हुए कहा, 'मेरा भाई चला गया और उसके साथ ही वह विषय भी समाप्त हो गया।' उन्होंने बताया कि अजीत पवार के निधन के बाद विलय को लेकर उनके पास कोई प्रस्ताव नहीं आया है और न ही इस संबंध में फिलहाल कोई बातचीत चल रही है।

शरद पवार से अजीत पवार गुट के नेताओं और परिवार के सदस्यों की मुलाकातों को लेकर पूछे गए सवाल पर सुप्रिया सुले ने कहा कि कौन किससे मिलता है, यह उनका आंतरिक मामला है। इस पर उन्हें कोई टिप्पणी नहीं करनी है।

सुप्रिया सुले के इस बयान से राष्ट्रवादी कांग्रेस के दोनों गुटों के विलय को लेकर चल रही अटकलों पर फिलहाल विराम लग गया है। उनके बयान को महाराष्ट्र की राजनीति में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

सड़कों पर दौड़ेंगी 1,500 नई इलेक्ट्रिक बसें

मार्च 2027 से शुरुआत, दिव्यांग यात्रियों के लिए विशेष सुविधा

मुंबई, यशभारत। महानगर की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए बेस्ट ने 1,500 वातानुकूलित विद्युत छोटी बसें शामिल करने की तैयारी की है। इसके लिए ईकेए और स्विच कंपनियों के साथ समझौता किया गया है। इन बसों के संचालन से यात्रियों को बेहतर सुविधा मिलेगी और मेट्रो रेल केंद्रों तक पहुंचना आसान होगा।

समझौते के अनुसार, ईकेए कंपनी 1,050 और स्विच कंपनी 450 बसों की आपूर्ति करेगी। इनका संचालन 12 वर्ष के अनुबंध के तहत किया जाएगा। नौ मीटर लंबी प्रत्येक बस में 28 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था होगी। दिव्यांग यात्रियों के लिए विशेष स्थान और चढ़ने-उतरने हेतु ढलानयुक्त पट्टी भी उपलब्ध होगी। एक बार पूरी तरह विद्युत ऊर्जा से चार्ज होने पर ये बसें कम से कम 200 किलोमीटर तक चल सकेंगी। इनमें निगरानी कैमरे, स्थान निर्धारण प्रणाली, अग्नि सुरक्षा व्यवस्था और मोबाइल दूरभाष को चार्ज करने की सुविधा होगी। योजना के अनुसार, पहली 225 बसें मार्च 2027 तक सड़कों पर उतारी जाएंगी।

केईएम की बंद लिफ्ट पर जागा प्रशासन

30 दिनों में शुरू होगी सेवा, दो नई लिफ्ट लगाने की भी तैयारी, उपमहापौर संजय घाड़ी ने किया दौरा

मुंबई, यशभारत। परेल स्थित केईएम अस्पताल में बंद पड़ी लिफ्ट को लेकर मुंबई के उपमहापौर संजय घाड़ी ने गुरुवार को अस्पताल का दौरा किया। उन्होंने डीन डॉ. हरीश पाठक और अन्य डॉक्टरों के साथ बैठक कर स्थिति की समीक्षा की। घाड़ी ने आश्वासन दिया कि पुरानी लिफ्ट की जगह नई लिफ्ट लगाने का काम पूरा हो चुका है और इसे अगले 30 दिनों के भीतर शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि संबंधित विभाग की लिफ्ट 39 साल पुरानी थी और उसकी कार्यक्षमता समाप्त हो चुकी थी। अस्पताल प्रशासन ने दो नई लिफ्ट लगाने का प्रस्ताव मुंबई महानगरपालिका को भेजा है। इसे महापौर और मनपा आयुक्त से चर्चा के बाद जल्द मंजूरी दिलाने का प्रयास किया जाएगा।



दौरे के दौरान घाड़ी ने विभिन्न वार्डों में जाकर मरीजों और उनके परिजनों से बातचीत की तथा लिफ्ट बंद होने से हो रही परेशानियों की जानकारी ली। उन्होंने बताया कि गंभीर रूप से घायल मरीजों को फिलहाल मुख्य इमारत में भर्ती किया जा रहा है। छठ पूजा पर उन्होंने कहा कि मनपा किसी धर्म या त्योहार के विरोध में नहीं है। पिछले कई वर्षों से छठ पूजा के लिए कृत्रिम तालाब बनाए जा रहे हैं। रेलवे स्टेशनों पर घोषणाएं भी यात्रियों की सुविधा और सही जानकारी देने के उद्देश्य से होनी चाहिए।

कब मिलेगा स्कूलों में बेटियों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण?

कराटे-जूडो के लिए हर साल लाखों रुपये का प्रावधान, फिर भी हजारों छात्राएं प्रशिक्षण से वंचित

मुंबई, यशभारत। बेटियों की सुरक्षा के लिए स्कूलों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण देने की सरकारी योजना दम तोड़ती नजर आ रही है। कराटे और जूडो प्रशिक्षण के लिए हर साल लाखों रुपये का प्रावधान होने के बावजूद मुंबई सहित राज्य के हजारों स्कूलों की छात्राएं इस सुविधा से वंचित हैं। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि आखिर बेटियों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण कब मिलेगा? स्कूली शिक्षा विभाग के माध्यम से सरकारी और स्थानीय निकायों के स्कूलों में छात्राओं को कराटे प्रशिक्षण देने की योजना बनाई गई है, लेकिन प्रशिक्षकों की नियुक्ति, नियमित प्रशिक्षण सत्र और बजट के उपयोग को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। अभिभावकों की मांग है कि दिवाली की छुट्टियों के बाद स्कूलों में प्राथमिकता के आधार पर प्रशिक्षण शुरू किया जाए।

यह समस्या उच्च शिक्षा संस्थानों में भी बनी हुई है। कॉप्स संगठन ने विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में छात्राओं के लिए तीन महीने का कराटे प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से शुरू करने की मांग की थी। महाराष्ट्र सरकार की वर्ष 2014 की तीसरी महिला नीति के मुद्दा क्रमांक 6.13 में भी प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान में छात्राओं के लिए कम से कम एक बार तीन महीने का प्रशिक्षण आयोजित करने का प्रावधान है। उच्च शिक्षा संचालनालय ने 5 सितंबर 2024 को इस संबंध में परिपत्र भी जारी किया था। टीचर डेमोक्रेटिक फ्रंट के प्रवक्ता राजेश पांडे पंड्या ने शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि केवल परिपत्र जारी करना पर्याप्त नहीं है। विभाग को निधि के इस्तेमाल, प्रशिक्षकों की नियुक्ति और प्रशिक्षण पाने वाली छात्राओं का ब्योरा भी सार्वजनिक करना चाहिए।

अडानी के सातारा प्रोजेक्ट की लागत में 99% कटौती

227 करोड़ की जगह जमा किए सिर्फ 2.27 करोड़ रुपए, केंद्र ने दिए जांच के आदेश

मुंबई, यशभारत। महाराष्ट्र के सातारा जिले में अडानी ग्रीन एनर्जी के 1,500 मेगावाट क्षमता वाले तारली पंप्ड स्टोरेज बिजली प्रोजेक्ट को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। कंपनी ने इस परियोजना की अनुमानित लागत 5,675 करोड़ रुपए से घटाकर महज 56.75 करोड़ रुपए दर्शाई है। इसका सीधा असर वन्यजीव संरक्षण के लिए जमा होने वाली राशि पर पड़ा है। पहले कंपनी को 227 करोड़ रुपए जमा करने थे, लेकिन संशोधित लागत के आधार पर यह रकम घटकर सिर्फ 2.27 करोड़ रुपए रह गई।

मामले का खुलासा होने के बाद केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 6 नवंबर को महाराष्ट्र वन विभाग को प्राथमिकता के आधार पर



जांच करने के आदेश दिए हैं। राज्य वन विभाग ने भी जांच शुरू कर दी है। यह परियोजना कोयना वन्यजीव अभयारण्य के संवेदनशील क्षेत्र और सह्याद्रि टाइगर रिजर्व के आसपास स्थित है। वन्यजीव संरक्षण के लिए परियोजना लागत का चार प्रतिशत जमा करना अनिवार्य किया गया था। वन्यजीव संरक्षक रोहन भाटे ने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के शिकायत पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराते हुए लागत में भारी कटौती पर सवाल उठाए हैं। वहीं, अडानी समूह का कहना है कि परियोजना पूरी तरह निजी जमीन पर है और इसमें वन भूमि शामिल नहीं है। कंपनी ने लागत घटाने के फैसले पर उठे सवालों का स्पष्ट जवाब नहीं दिया है।

बॉलीवुड की सुरक्षा को लेकर सरकार सख्त

धमकी देने वालों को मंत्री आशीष शेलार की दो टूक

मुंबई, यशभारत। मुंबई में फिल्मी हस्तियों और बॉलीवुड से जुड़े लोगों को लगातार मिल रही धमकियों के बीच महाराष्ट्र सरकार ने उनकी सुरक्षा को लेकर भरोसा दिलाया है। राज्य के मंत्री आशीष शेलार ने कहा है कि मुंबई में किसी को डरने की जरूरत नहीं है। यहां डरना मना है। सरकार बॉलीवुड और फिल्म उद्योग से जुड़े सभी लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मंत्री शेलार ने कहा कि मुंबई पुलिस धमकी भरे फोन और संदेशों के स्रोत का पता लगाने में जुटी है। खास तौर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के जरिए किए जा रहे फोन कॉल की जांच की जा रही है,



ताकि फर्जी धमकियों और वास्तविक खतरों के बीच अंतर किया जा सके। पुलिस दोषियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करने की दिशा में काम कर रही है।

मंत्री शेलार ने कहा कि मुंबई पुलिस धमकी भरे फोन और संदेशों के स्रोत का पता लगाने में जुटी है। खास तौर पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के जरिए किए जा रहे फोन कॉल की जांच की जा रही है, ताकि फर्जी धमकियों और वास्तविक खतरों के बीच अंतर किया जा सके। पुलिस दोषियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करने की दिशा में काम कर रही है।

शेलार का यह बयान अभिनेता टाइगर श्रॉफ की कार पर 18 अक्टूबर को जुहू में हुई गोलीबारी के बाद आया है। इस घटना में अभिनेता बाल-बाल बच गए थे, जबकि उनके चालक को चोट आई थी। लगातार मिल रही धमकियों के कारण फिल्म जगत में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ी है। शेलार ने भरोसा दिलाया कि सरकार इस मामले को गंभीरता से ले रही है और मुंबई पुलिस सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के लिए सक्रिय है।

हाथों में कलछी लाखों में कमाई

मुंबई में महीने के 1.05 लाख रुपये कमाने वाले रसोइये की थाईलैंड जाने की तैयारी

मुंबई, यशभारत। मुंबई में काम करने वाले एक रसोइये की कमाई इन दिनों सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बनी हुई है। वह हर महीने 1.05 लाख रुपए कमाता है और अब अपनी पहली विदेश यात्रा के रूप में थाईलैंड जाने की तैयारी कर रहा है। उसकी



आर्थिक स्थिति की तुलना उसके नियोक्ता ने अपने एमबीए करने वाले दोस्तों से की है, जिसके बाद यह मामला चर्चा में आ गया। हालांकि, उसकी कमाई का मुख्य आधार एक ही नौकरी नहीं, बल्कि अलग-अलग घरों और फिल्म यूनिट में खाना बनाने का काम है। वह चार नियोक्ताओं के यहां काम करता है। एक घर से 18 हजार, दूसरे से 16,500 और तीसरे परिवार से 38 हजार रुपए मिलते हैं। इसके अलावा फिल्म की रातभर चलने वाली शूटिंग में खाना बनाने के लिए उसे प्रति रात 7,500 रुपए मिलते हैं।

उसकी पत्नी भी 45 हजार रुपए प्रतिमाह कमाती है। इस तरह परिवार की कुल मासिक आय करीब डेढ़ लाख रुपए है। मुंबई में रहने वाला यह 34 वर्षीय रसोइया खर्चों पर नियंत्रण रखता है। उसने किस्तों पर नया आईफोन प्रो खरीदा है। अब वह पहली बार हवाई यात्रा, पासपोर्ट और विदेश घूमने का अनुभव लेने के लिए थाईलैंड जाने की योजना बना रहा है। उसके नियोक्ता मनुराज गर्ग ने लिंक्डइन पर यह अनुभव साझा करते हुए बताया कि अच्छी आर्थिक स्थिति केवल बड़ी डिग्री या ऊंचे पद से नहीं, बल्कि आमदनी, खर्च और बचत के संतुलन से बनती है।

मंत्रालय की थाली में गुजराती नाश्ते की बहार

ढोकला-दाबेली की एंट्री, कांदेपोहे की छुट्टी, 54 व्यंजनों का नया मेन्यू तैयार

मुंबई, यशभारत। ,महाराष्ट्र के मंत्रालय और विधानभवन की कैंटीन में अब खानपान का स्वाद बदलने जा रहा है। राज्य सरकार ने दोनों कैंटीन के लिए 54 खाद्य पदार्थों का नया मेन्यू तैयार किया है। इसमें गुजराती, दक्षिण भारतीय और उत्तर भारतीय व्यंजनों को प्रमुखता दी गई है। हालांकि, महाराष्ट्र के लोकप्रिय नाश्ते कांदेपोहे को जगह नहीं मिलने से नए मेन्यू पर सवाल उठने लगे हैं।

नई सूची में मूंग ढोकला, सफेद ढोकला और कच्छी दाबेली जैसे गुजराती व्यंजनों के



साथ पुणेरी मिसल, शेगांव कचोरी और कोथिंबीर वड़ी भी शामिल हैं। दक्षिण भारतीय व्यंजनों में पालक इडली, मूंग इडली, वेज इडली, मसाला डोसा, पेपर डोसा और प्याज उत्तपम परोसे जाएंगे। इसके अलावा बीट कबाब, हरा-भरा कबाब और सब्जियों का सूप भी उपलब्ध होगा। सरकार का कहना है कि इस बदलाव का उद्देश्य कर्मचारियों और अधिकारियों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। इसी क्रम में समोसे, बटाटे वड़े और भजिया जैसे तले हुए खाद्य पदार्थों को सीमित करने की पहल की गई है। चाय-कॉफी के स्थान पर नींबू चाय और हरी चाय को बढ़ावा देने का भी निर्णय लिया गया है।

नए मेन्यू में कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए अलग-अलग दरें निर्धारित की गई हैं। अधिकांश व्यंजनों की कीमत में पांच रुपये का अंतर रखा गया है।

मंत्रालय की थाली से चपाती गायब, पाव के भरोसे तीन हजार कर्मचारी

मंत्रालय की कैंटीन में चपाती बंद होने से सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों की परेशानी बढ़ गई है। यहां प्रतिदिन करीब तीन हजार लोग भोजन करते हैं। फिलहाल, दाल-चावल के साथ पाव दिया जा रहा है, लेकिन कई कर्मचारी स्वास्थ्य और खानपान संबंधी कारणों से पाव खाना पसंद नहीं कर रहे हैं। कैंटीन के नवीनीकरण के चलते चपाती बनाने की व्यवस्था प्रभावित हुई है। तवे पर चपाती बनाने का प्रयास किया गया, लेकिन अत्यधिक गर्मी के कारण अग्नि सुरक्षा अलार्म बजने लगा। इसके बाद यह व्यवस्था रोकनी पड़ी। नासिक, पुणे, कर्जत, कसारा, डहाणू और विरार जैसे दूरदराज के क्षेत्रों से मंत्रालय आने वाले कर्मचारी भी इसी कैंटीन पर निर्भर हैं। कर्मचारियों ने भोजन में चपाती का विकल्प फिर से शुरू करने की मांग की है।

चिंतन-मनन

विकास की कसौटी

भारत आज दुनिया की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। आर्थिक विकास के आंकड़े, बढ़ता बुनियादी ढांचा, एक्सप्रेसवे, आधुनिक रेल नेटवर्क, डिजिटल सेवाएं और औद्योगिक विस्तार देश की बदलती तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। विकसित भारत का सपना भी इसी प्रगति की मजबूत नींव पर खड़ा है। लेकिन इस चमकती तस्वीर के बीच एक सवाल लगातार सामने आता है कि क्या आर्थिक विकास का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक समान रूप से पहुंच रहा है? क्या आम आदमी का जीवन उतना ही आसान और सुरक्षित हुआ है, जितनी तेजी से देश की अर्थव्यवस्था आगे बढ़ रही है? आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 के अनुसार भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया गया है। यह निश्चित रूप से उत्साहजनक उपलब्धि है। आर्थिक विकास से निवेश, उत्पादन, व्यापार और सरकारी राजस्व के अवसर बढ़ते हैं। इसके लिए सरकार की नीतियों, उद्योगों की भूमिका और बुनियादी ढांचे के विस्तार का महत्व भी स्वीकार करना होगा। हालांकि, जीडीपी की वृद्धि अपने आप में आम नागरिक की आर्थिक खुशहाली का पूरा प्रमाण नहीं हो सकती। विकास का वास्तविक अर्थ तब सामने आता है, जब उसका लाभ किसान, मजदूर, छोटे व्यापारी, नौकरीपेशा व्यक्ति, युवा और मध्यमवर्गीय परिवार तक पहुंचे। आज आम परिवार की सबसे बड़ी चिंता महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार है। एक सामान्य परिवार अपनी आय का बड़ा हिस्सा बच्चों की पढ़ाई, मकान के किराये, राशन, बिजली और चिकित्सा पर खर्च करता है। निजी अस्पतालों में इलाज और निजी शिक्षण संस्थानों की फीस लगातार बड़ी आर्थिक चुनौती बनती जा रही है। सरकारी अस्पतालों और विद्यालयों पर भी आबादी का दबाव है। ऐसे में आर्थिक विकास के आंकड़ों के साथ यह देखना भी जरूरी है कि आम आदमी की बचत बढ़ रही है या उसकी आय का अधिकांश हिस्सा जरूरी खर्चों में समाप्त हो रहा है। देश के सामने रोजगार का प्रश्न भी उतना ही महत्वपूर्ण है। युवाओं के पास डिग्रियां हैं, तकनीकी शिक्षा है और आगे बढ़ने की आकांक्षा भी है, लेकिन उन्हें उनकी योग्यता के अनुरूप स्थायी रोजगार मिलना अभी भी बड़ी चुनौती है। केवल कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करना पर्याप्त नहीं है। उद्योगों, लघु एवं मध्यम उद्यमों, कृषि आधारित व्यवसायों और सेवा क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा करने होंगे। स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने के साथ छोटे उद्यमियों को आसान ऋण, बाजार और तकनीकी सहायता उपलब्ध करानी होगी। शिक्षा और स्वास्थ्य को विकास की प्राथमिकता बनाना भी आवश्यक है। सरकारी विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, प्रशिक्षित शिक्षक, आधुनिक प्रयोगशालाएं और डिजिटल सुविधाएं सुनिश्चित होनी चाहिए। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता का अंतर कम करना होगा। इसी तरह सरकारी अस्पतालों में पर्याप्त चिकित्सक, दवाएं, जांच सुविधाएं और बेहतर चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराना जरूरी है। स्वास्थ्य सेवा इतनी सुलभ हो कि किसी परिवार को बीमारी के कारण अपनी वर्षों की बचत या संपत्ति गंवानी न पड़े। विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी है। किसान की आय, कृषि की लागत, सिंचाई, फसल का उचित मूल्य और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाए बिना समावेशी विकास का लक्ष्य अधूरा रहेगा। महिलाओं की आर्थिक भागीदारी, बुजुर्गों की सामाजिक सुरक्षा और कमजोर वर्गों के लिए बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता भी विकास के मूल्यांकन का हिस्सा होनी चाहिए। सरकार के लिए आवश्यक है कि बजट और नीतियां बनाते समय बड़े निवेश और विकास दर को प्राथमिकता के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, स्वच्छ पेयजल, सस्ती आवास व्यवस्था और सामाजिक सुरक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाए। योजनाओं की सफलता का आकलन इस आधार पर होना चाहिए कि उनका लाभ कितने लोगों तक पहुंचा और उनके जीवन में कितना वास्तविक बदलाव आया। इसके लिए पारदर्शिता, जवाबदेही और स्थानीय स्तर पर नियमित निगरानी जरूरी है। विकसित भारत का सपना किसी एक सरकार, संस्था या वर्ग का लक्ष्य नहीं बल्कि पूरे देश की सामूहिक आकांक्षा है। आर्थिक शक्ति और आधुनिक तकनीक इस लक्ष्य तक पहुंचने के महत्वपूर्ण साधन हैं, लेकिन अंतिम मंजिल नागरिकों की खुशहाली है। देश तभी वास्तव में विकसित कहलाएगा, जब किसी गरीब बच्चे को अच्छी शिक्षा के लिए संघर्ष न करना पड़े, किसी परिवार को इलाज के अभाव में परेशानी न झेलनी पड़े और किसी युवा को रोजगार के लिए अपनी योग्यता से समझौता न करना पड़े। जीडीपी देश की आर्थिक प्रगति बताती है, लेकिन आम आदमी के चेहरे की संतुष्टि ही विकास की वास्तविक सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

कड़वे वचन



किसी ने पूछाः मंदिर जाते हैं तो पहले घंटी क्यों बजाते हैं? मैंने प्रतिप्रश्न कियाः फोन आता है तो पहले घंटी क्यों बजती है? फोन की घंटी इशारा है कि किसी ने पुकारा है और मंदिर की घंटी भी इशारा है कि प्रभु तेरा ही सहारा है। मंदिर की घंटी के संग मन मंदिर की घंटी भी बजनी चाहिए। कहें- हे प्रभु मेरा नाथ तू है, दुनिया में हूं अकेला, पर मरे साथ तू है।

आज का राशिफल



ज्योतिषाचार्य पंडित लोकेश व्यास

पंचांगः-14 नवम्बर, 2026
दिन-शनिवार, अश्विन शुक्ल 10
विक्रम संवत 2083

मेष चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ
बिना मांगे सलाह देने से बचे लेनदेन के मामले में सतर्क रहें देवी पार्वती का पूजन करें

वृष इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो
घर के बाहर वाद-विवाद से दूर रहे मन की इच्छा पूर्ण होगी चांदी की गिलास में पानी पिए

मिथुन का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह
उधार लेने व देने से बचें विद्यार्थियों के लिए समय ठीक नहीं है मन में भटकाव रहेगा वट वृक्ष का पूजन करें

कर्क ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो
ंरुका हुआ पुराना काम बन सकता है परिवार के किसी सदस्य के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है ओम विधि रूपाय नमः का जाप करें

सिंह मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे
वरिष्ठ ओं का मार्गदर्शन मिलेगा अपने ऊपर फोकस बनाए रखें भगवान शिव को जल चढ़ाएं

कन्या ढो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो
कारोबारी कार्य में मन लगेगा लाभ के अवसर मिलेंगे लालच में ना फंसे ओम नमः पार्वती पति यह नमः का जाप करें

तुला रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते
धन लाभ के अवसर बढ़ेंगे पारिवारिक चिंता रहेगी शुक्र ग्रह का पूजन करें

वृश्चिक ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे
मन प्रफुल्लित रहेगा तेज ड्राइविंग से बचे हनुमानजी के दर्शन करे

धनु ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे
आज मनमाफिक काम होंगे पुरानी स्मृतियों का मन पर कब्जा रहेगा ब्राह्मणों को दान दे

मकर भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी
घूमने फिरने की योजना साकार होगी मनचाहे लोगों का साथ मिलेगा हाइपर होने से बचे शनि का पूजन करें

कुंभ गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा
दिन तनाव भरा कठिन रहेगा शाम की बात मन प्रसन्न रहेगा पीपल के वृक्ष में दिया लगाएं

मीन दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची
लोगों के मैसेज पढ़ कर मन प्रसन्न होगा तारीफ होगी लालच में ना फंसे गुरुओं की सेवा करें

14 नवंबर बाल दिवसः अधिकार, संस्कार और सुनहरे भविष्य का संकल्प

बच्चों के मौलिक अधिकारों, उनकी शिक्षा, पोषण, सुरक्षा और सर्वांगीण विकास के प्रति समाज को जागरूक करने तथा उन्हें सुरक्षित एवं रचनात्मक वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से हमारे देश में प्रत्येक वर्ष 14 नवंबर को बाल दिवस मनाया जाता है। यह दिन देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती का भी अवसर है, जिन्हें बच्चे स्नेहपूर्वक चाचा नेहरू कहकर पुकारते थे। वास्तव में, बाल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को शोषण से बचाकर उनके अधिकारों की रक्षा करना, उन्हें अच्छी शिक्षा एवं समुचित पोषण उपलब्ध कराना और उनके संपूर्ण विकास के लिए सुरक्षित तथा खुशहाल वातावरण तैयार करना है, ताकि वे देश के बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।गौरतलब है कि वर्ष 1889 में जन्मे पंडित जवाहरलाल नेहरू की वर्ष 2026 में 137वीं जयंती है। वर्ष 1964 में उनके निधन के बाद से 14 नवंबर को बाल दिवस मनाने की परंपरा शुरू हुई और इस वर्ष इसका 63वाँ आयोजन है। वहीं, प्रतिवर्ष 20 नवंबर को अंतरराष्ट्रीय बाल दिवस (विश्व बाल दिवस) मनाया जाता है। इस अवसर पर यूनिसेफ बच्चों के अधिकारों, कल्याण और उनके बेहतर भविष्य से जुड़े मुद्दों को वैश्विक स्तर पर प्रमुखता देता है तथा प्रतिवर्ष इस दिशा में एक विशेष विषय पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

आज हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई के तेज रफ्तार युग में जी रहे हैं। ऐसे में बाल दिवस केवल उत्सव मनाने का दिन नहीं, बल्कि बच्चों के बदलते बचपन और उनके सामने उभरती नई चुनौतियों पर गंभीर चिंतन करने का अवसर भी बन गया है। कहना गलत नहीं होगा कि आज के बच्चे मिट्टी के खिलौनों और दादी-नानी की कहानियों की दुनिया से निकलकर स्मार्टफोन, टैबलेट और एल्गोरिदम की आभासी दुनिया में बड़े हो रहे हैं। जहाँ एक ओर एआई ने व्यक्तिगत शिक्षा, त्वरित ज्ञान और दिव्यांग बच्चों के लिए सीखने के नए द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर तैयारशुदा और पलभर में मिलने वाले उत्तरों की सुविधा ने उनकी मौलिक कल्पनाशीलता, जिज्ञासा और स्वयं प्रयास करके सीखने की प्रवृत्ति के सामने नई चुनौतियाँ भी खड़ी कर दी हैं।ऐसे में इस बाल दिवस की सबसे बड़ी सार्थकता यही है कि हम बच्चों को तकनीक का गुलाम बनाने के बजाय उसका विवेकशील उपयोगकर्ता बनाएं। उनके हाथों में स्मार्ट उपकरण थमाने के साथ-साथ उनके भीतर मानवीय संवेदनाओं, खेल के मैदान की ऊर्जा और प्रकृति से जुड़ाव की लौ भी जीवित रखें। तकनीक उनके ज्ञान और विकास का साधन बने, न कि उनके स्वाभाविक बचपन और रचनात्मकता पर हावी होने का माध्यम।

वास्तव में, बाल दिवस आत्ममंथन करने का दिन है कि हम अपने बच्चों को कैसा बचपन और कैसा भविष्य दे रहे हैं। आज जब दुनिया तेजी से बदल रही है, तकनीक बच्चों की दिनचर्या का हिस्सा बन चुकी है और प्रतिस्पर्धा का दबाव कम उम्र में ही उनके मन-मस्तिष्क पर हावी होने लगा है, तब बच्चों के विकास को केवल अच्छे अंक और बेहतर करियर तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता। सच तो यह है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सबसे पहले उन्हें सुरक्षित, स्नेहपूर्ण और भयमुक्त वातावरण देना जरूरी है। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि बच्चे का व्यक्तित्व केवल स्कूल की चारदीवारी में नहीं बनता, बल्कि परिवार, समाज, मित्रों और परिवेश से भी आकार लेता है। माता-पिता



का समय, उनका व्यवहार, आपसी संवाद और दिए गए संस्कार बच्चे के मानसिक एवं भावनात्मक विकास की बुनियाद होते हैं। अतः आज जरूरत इस बात की है कि माता-पिता बच्चों पर अपनी अपेक्षाएँ थोपने के बजाय उनकी रुचियों, क्षमताओं और भावनाओं को समझें तथा उन्हें अपनी प्रतिभा निखारने के पर्याप्त अवसर दें।

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में कहें तो, मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। अर्थात् शिक्षा भीतर छिपी श्रेष्ठ संभावनाओं को बाहर लाने का माध्यम है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री हासिल करना और नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, विवेकशील तथा जिम्मेदार नागरिक तैयार करना भी है।सच तो यह है कि बच्चों को सवाल पूछने, तर्क करने, नई चीजें सीखने और अपनी कल्पनाशक्ति को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। रटने और अंकों की अंधी दौड़ से बाहर निकलकर शिक्षा को रचनात्मकता, व्यावहारिक ज्ञान और जीवन-मूल्यों से जोड़ना समय की मांग है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो बच्चों को केवल प्रतिस्पर्धा करना ही नहीं, बल्कि जीवन की चुनौतियों का सामना करना, सही-गलत में अंतर समझना और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना भी सिखाए।

आज के डिजिटल दौर में बच्चों को मोबाइल और आभासी दुनिया तक सीमित रखने के बजाय मैदान, पुस्तकालय, प्रकृति और वास्तविक सामाजिक जीवन से जोड़ना भी बेहद जरूरी है। बच्चों के विकास में खेलकूद, पौष्टिक भोजन, पर्याप्त नींद और नियमित दिनचर्या की अहम भूमिका होती है। खेल केवल शारीरिक विकास का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व, धैर्य और हार को स्वीकार करने की सीख भी देते हैं। इसी तरह संगीत, साहित्य, कला और अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ बच्चों की संवेदनशीलता, कल्पनाशक्ति और अभिव्यक्ति क्षमता को समृद्ध करती हैं।इसके साथ ही,आज बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी अत्यंत आवश्यक है। हमें समझना होगा कि हर बच्चा एक जैसा नहीं होता। किसी की रुचि विज्ञान में होती है तो किसी की साहित्य, खेल, संगीत या कला में। किसी की सीखने की गति तेज होती है तो किसी को थोड़ा अधिक समय चाहिए। ऐसे में बच्चों की तुलना दूसरे बच्चों से करना, छोटी-छोटी गलतियों पर उन्हें अपमानित करना और असफलता को अपराध की तरह देखना उनके आत्मविश्वास को कमजोर करता है। बच्चों को यह भरोसा मिलना चाहिए कि असफलता जीवन का अंत नहीं, बल्कि सीखने और आगे बढ़ने का एक अवसर है।बच्चों में संवेदनशीलता, समानता, पर्यावरण संरक्षण, बुजुर्गों के प्रति सम्मान, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे जीवन-मूल्यों का विकास भी जरूरी है। हमारी जिम्मेदारी केवल उन्हें सफल व्यक्ति बनाना नहीं, बल्कि एक अच्छा इंसान बनाना भी है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात तब तक अधूरी है, जब तक समाज उनके मौलिक अधिकारों और सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं समझता। बाल श्रम, बाल विवाह, शोषण, लैंगिक भेदभाव और शिक्षा से वंचित बच्चों की समस्याओं के प्रति समाज को गंभीर होना होगा। प्रत्येक बच्चे को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्याप्त पोषण और सुरक्षित वातावरण मिलना उसका मौलिक अधिकार है, किसी का उपकार नहीं।यह भी जरूरी है कि परिवार, विद्यालय, समाज और सरकार मिलकर ऐसा वातावरण तैयार करें, जहाँ बच्चे बिना किसी भय और दबाव के अपनी प्रतिभा को निखार सकें। उनकी बात सुनी जाए, उनकी जिज्ञासाओं को प्रोत्साहित किया जाए और उनकी समस्याओं को गंभीरता से समझा जाए। बच्चों के अधिकारों की रक्षा केवल कानूनों और सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है, इसके लिए सामाजिक संवेदनशीलता और सामूहिक जिम्मेदारी भी उतनी ही जरूरी है।

बाल दिवस हमें याद दिलाता है कि बच्चे केवल देश का भविष्य ही नहीं, बल्कि वर्तमान की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी हैं। यह दिन पंडित जवाहरलाल नेहरू के उस सपने की याद दिलाता है, जिसमें हर बच्चा शिक्षित, स्वस्थ और सुरक्षित हो। यह अवसर हमें संकल्प लेने के लिए प्रेरित करता है कि बिना किसी भेदभाव के सभी बच्चों को आगे बढ़ने के समान अवसर मिलें तथा समाज उन्हें बाल श्रम, शोषण और अन्य सामाजिक बुराइयों से बचाने के लिए सजग रहे।बच्चों को केवल किताबी ज्ञान देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें अच्छे संस्कार, प्रेम, संवेदनशीलता और नैतिक मूल्य देना भी उतना ही आवश्यक है। यदि आज के बच्चों को उचित मार्गदर्शन, शिक्षा, पोषण और सुरक्षित वातावरण मिलेगा, तो कल का भारत स्वतः ही सशक्त और समृद्ध बनेगा। हर बच्चे को खिलखिलाने, खेलने, अपनी जिज्ञासाओं को उड़ान देने और सपनों को साकार करने का पूरा अधिकार मिलना चाहिए।

अंततः, बाल दिवस की सच्ची सार्थकता केवल समारोहों, भाषणों और उपहारों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह हमारे व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी में भी दिखाई देनी चाहिए, क्योंकि जिस समाज का बचपन सुरक्षित, शिक्षित, स्वस्थ और खुशहाल होता है, उसी समाज का भविष्य उज्ज्वल होता है।

(सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार)

स्त्री-प्रश्नों पर मूक होता समाज



सद्य विवाहिताओं की मृत्यु के मामले अक्सर मीडिया में चर्चित होते रहते हैं। इन मामलों में देखने में आता है कि इनकी शिकार बनने वाली महिलाएं लगातार ऐसी परिस्थितियों के बीच रहने को विवश होती हैं जिनमें किसी भी संवेदनशील व्यक्ति के लिए जीना मुश्किल होता है। ऐसे मामले होने के बाद लड़कियों के घरवाले ससुराल पक्ष पर दहेज प्रताड़ना सहित कई तरह के आरोप लगाते हैं और उन्हें मरने हेतु विवश करने या जान लेने का दोषी बताते हैं। इन सभी मामलों में सबसे कॉमन चीज यह है कि दहेज के लालच में या लड़की के परिवार से पैसे ऐंठने के चक्कर में ऐसी घटनाएं होती हैं। एक सामाजिक के रूप में दहेज देने वाला अपराध में, दहेज लेने वाले के बराबर ही हिस्सेदार होता है। लड़के के साथ ही लड़की के माता-पिता भी इसमें बराबर के दोषी होते हैं।

हमारे देश में दहेज हत्या की दर बहुत चिंताजनक है। दहेज निषेध अधिनियम 1961 से लागू होने के बावजूद दहेज की वजह से होने वाली मृत्यु में वृद्धि इस प्रथा की लगातार बढ़त को दर्शाती है। दहेज के लिए अब भी बहुत महिलाओं को उत्पीड़न, मारपीट और आत्महत्या जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। इस संबंध में कई सारी धाराएं हैं जिनमें आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान किया गया है लेकिन लम्बी जाँच प्रक्रिया की वजह से दोषियों को सजा मिलना दुर्लभ बना हुआ है। गवाही देने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता, जानते-बुझते सब अपना मुँह सी लेते हैं, ऐसे में सजा हो पाना सम्भव ही नहीं रह जाता। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार भारत में 2017 से 2022 के बीच प्रतिवर्ष औसतन 7,000 दहेज से संबंधित हत्याएँ दर्ज की गईं। इन आँकड़ों में वे मामले शामिल नहीं होते जिनकी शिकायत नहीं की जाती। विश्व बैंक द्वारा वर्ष 1960 से 2008 तक ग्रामीण भारत में किये गए एक अध्ययन में पाया गया कि 95% शादियों में दहेज दिया गया था। यानी दहेज शादी का पर्याय हो चुका है।

दहेज के कारण बड़ी संख्या में होने वाली मौतों के बावजूद इस प्रथा का जारी रहना यह बताता है कि किसी सामाजिक समस्या को कानून बनाने मात्र से हल नहीं किया जा सकता। पिछले सालों में जिस तरह की भव्य शादियों का ट्रेंड हुआ है इससे यह कुप्रथा और भी बढ़ रही है। आत्मनिर्भर और शिक्षित लड़कियों की शादियों में भी खुलकर दहेज दिया जा रहा है। फिर कैसे यह सब रुकेगा जब समाज इसका भिन्न-भिन्न कारण बताकर महिमामंडन भी किए जा रहा है? यह प्रथा महिलाओं का वस्तुकरण करती है और पितृसत्तात्मक समाज में लैंगिक भेदभाव को बनाए रखने का माध्यम बनती है। दहेज का मुद्दा एक समाज के रूप में हमारे लिए विषय कभी नहीं बनता। इसमें सभी बराबर के भागीदार हैं। बेटी को दहेज दिया ही इसलिए जाता है कि उसका हिसाब बेटे की शादी में कर लिया जाएगा। दहेज किस तरह भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में औरत को दोयम दर्जे पर बनाए रखने की पुख्ता व्यवस्था करता है इस पर कोई बहस नहीं होती। दहेज आर्थिक मसला नहीं है न केवल यह महिलाओं की शिक्षा या आर्थिक आत्मनिर्भरता से जुड़ा है। यह पूरी व्यवस्था पैतृक सम्पत्ति से स्त्रियों को अलग करने और ताउम्र उन्हें पुरुष पर निर्भर रखने के लिए बनाई गई है। बेटी को सम्पत्ति के हक से महरूम करना और दहेज देना एक ही विषय के दो पहलू हैं। सम्पत्ति में हक नहीं देना पड़े इसीलिए दहेज दिया जाता है। इससे लड़कियाँ अहसान के रूप में उम्रभर भावनात्मक रूप से अपने परिवार पर निर्भर बनी रहती हैं। यह स्त्रियों को सदैव पराधीन बनाए रखने का तन्त्र है जिसे थोड़ा नुकसान झेलकर बनाए रखा जा सकता है। लड़की को दिए जाने वाले दहेज पर भी उसका अपना कोई हक नहीं होता वह अगले परिवार की सम्पत्ति है। बहुत सारा दहेज देकर विदा की हुई बेटी भी अपने घर में लौट नहीं सकती है। कोई समस्या होने पर अधिकांश लड़कियों का परिवार उन्हें अकेला छोड़ देता है और मृत्यु तक सब कुछ ठीक होने का इंतज़ार करता है। यह किस दर्जे की क्रूरता है? भारत में विवाह जहाँ एक सामाजिक मसला है वहीं विवाह में आने वाली समस्या को निजी माना गया है। इन दोनों के अन्तर्विरोध से भारतीय विवाह समस्याओं और संकटों के कुरुक्षेत्र बनने को बाध्य रहते हैं। सामाजिक दबाव के कारण परिवार दहेज मांगों को पूरा करना जहाँ अपनी मजबूरी मानते हैं वहीं इस वजह से होने वाली हिंसा का सामान्यीकरण किया जाता है। उत्पीड़न और हिंसा के अनेक मामलों की रिपोर्ट ही नहीं की जाती। समाज दहेज लोभी परिवारों का विरोध करने की बजाय इस गैरकानूनी प्रथा को प्रत्यक्ष या परोक्ष तरीके से बढ़ावा देने का काम करता है। इस पूरी व्यवस्था में महिलाएं, भले ही वह माँ हो या सास पितृसत्ता की सबसे बड़ी पैरोकार बनकर खड़ी होती हैं। वे लड़की के होने को, उसकी सगाई टूटने को, शादी के बाद वापस घर लौटने को, अलग हो जाने को, लड़की के अस्मिता बोध को परिवार के लिए शर्म की तरह परिभाषित करती हैं। इस तरह लड़की के लिए स्वयं को बचाए रखने का कोई रास्ता समाज नहीं छोड़ता।प्रश्न यह है कि क्या इन मौतों से हमारे समाज को कोई फ़र्क पड़ता है, फ़र्क यदि पड़ता तो देशभर में रोज-रोज ऐसी घटनाएं दोहराई जाती रहती? लोग इन घटनाओं को सामाजिक व्यवस्था की उपज और अनिवार्य स्थिति नहीं मानते बल्कि दुर्घटनाओं की तरह मानते हैं। इससे उन्हें इन घटनाओं के पीछे की कहानी में अपनी भूमिका को विश्लेषित नहीं करना पड़ता, वे स्वयं अपराध-बोध से मुक्त रहते हैं। ऐसी मनोवृत्ति में ही इस तरह की घटनाएँ दोहराई जाती रहती हैं। इन्हें लड़की का दुर्भाग्य मानकर छोड़ दिया जाता है। यही कारण है कि ऐसे आरोप वाले परिवारों में लोग अपनी बेटियां देने में नहीं हिचकते, उन लड़कों का बहुत जल्द पुनर्विवाह हो जाता है। लड़की के मरने को समाज में समस्या के तौर पर नहीं देखा जाता बल्कि शर्म मानकर उसे दबा दिया जाता है। समाज की स्मृति में इन हत्याओं का कोई स्थान नहीं होता। दहेज के लिए होने वाली हत्याओं में कितनों को सजा होती हैं, वे केस फिर कुछ ले-देकर उठा लिए जाते हैं। जब तक समाज में महिलाओं को अपने निर्णय लेने की आजादी नहीं होगी तब तक ऐसे मामले होते ही रहेंगे। अकेले व्यक्ति से गलती हो सकती है लेकिन एक व्यवस्था जिस गलती को सालों-साल दोहराती है वह गलती नहीं सामाजिक निर्णय होता है। उन निर्णयों के बदलने हेतु सामाजिक संरचना को बदलना आवश्यक होता है। लड़कियों को ही अपने बारे में सोचना पड़ेगा। माता-पिता पर भावनात्मक निर्भरता ठीक है किन्तु अपनी कदर भी उन्हें करनी सीखनी चाहिए। उन्हें ही अपने लिए रास्ते बनाने होंगे, समाज उनके लिए सदैव से एक बंद रास्ता ही है।

(डॉ. मोनिका भाम्भू कलाना -यह लेखिका के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

गर्म होती दुनिया में बढ़ते प्रदूषण से घुटती सांसें की चुनौती

आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की उस कठोर सच्चाई का सामना कर रही है, जिसे कभी भविष्य की आशंका समझा जाता था। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखा, बाढ़, चक्रवात, जंगलों की आग, समुद्र के बढ़ते जलस्तर और असामान्य गर्मी अब असाधारण घटनाएं नहीं रह गई हैं। प्रकृति का संतुलन जिस तेजी से बिगड़ रहा है, उसने मानव सभ्यता के सामने अस्तित्व का गंभीर प्रश्न खड़ा कर दिया है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की 9 नवंबर 2026 को जारी स्टेट ऑफ द क्लाइमेट अपडेट 2026 रिपोर्ट इस संकट की भयावहता को वैज्ञानिक आंकड़ों के साथ सामने रखती है। रिपोर्ट के अनुसार 2026 पिछले चार सबसे गर्म वर्षों में शामिल होने की राह पर है और जनवरी से सितंबर तक वैश्विक औसत तापमान 1850-1900 के पूर्व-औद्योगिक औसत से लगभग 1.47 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। 2015 से 2026 तक के सभी 12 वर्ष रिकॉर्ड के सबसे गर्म वर्ष रहे हैं। यह आंकड़ा केवल तापमान की वृद्धि का आंकड़ा नहीं है, बल्कि मानव जीवन के बढ़ते संकट का संकेत है। समुद्रों में जमा हो रही अतिरिक्त गर्मी, पिघलते ग्लेशियर, बढ़ता समुद्र-स्तर, बढ़ता प्रदूषण और बदलता वर्षा चक्र आने वाले वर्षों की गंभीर चुनौतियों का संकेत दे रहे हैं। डब्ल्यूएमओ के अनुसार महासागर लगातार दसवें वर्ष रिकॉर्ड गर्मी की ओर हैं और 2026 में वैश्विक समुद्र-स्तर भी रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचा है।

इस वर्ष की स्थिति इसलिए भी अधिक चिंताजनक है क्योंकि मजबूत अलनीनो विकसित हो रहा है। डब्ल्यूएमओ के अनुसार अगस्त से अलनीनो तेजी से मजबूत हुआ है और नवंबर 2026 से जनवरी 2027 के बीच इसकी तीव्रता असाधारण स्तर तक पहुंच सकती है। इसके कारण



2027 में अत्यधिक गर्मी, सूखा और भारी वर्षा जैसी चरम मौसमी घटनाओं का जोखिम बढ़ सकता है। अर्थात खतरा केवल आज का नहीं है। आने वाला वर्ष भी मानवता को प्रकृति के कठोर रूप का सामना करा सकता है। यही कारण है कि जलवायु परिवर्तन को केवल पर्यावरण मंत्रालयों या अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का विषय मानना अब गंभीर भूल होगी। यह स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, खाद्य सुरक्षा, रोजगार, जलस्रोत, आवास और सामाजिक स्थिरता से जुड़ा प्रश्न बन चुका है। जलवायु संकट की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि इसका सबसे बड़ा बोझ उन देशों और समुदायों पर पड़ रहा है, जिनका ऐतिहासिक कार्बन उत्सर्जन अपेक्षाकृत कम रहा है। विकासशील और गरीब देशों के सामने एक साथ दो चुनौतियां हैं-विकास की आवश्यकताओं को पूरा करना और जलवायु संकट से स्वयं को बचाना।

दशकों तक विकसित देशों ने औद्योगिक विकास के नाम पर बड़े पैमाने पर जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल किया। आज जब विकासशील देश आर्थिक प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं, उनसे उत्सर्जन कम करने की अपेक्षा की जाती है। इसलिए जलवायु न्याय का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि वैश्विक समुदाय वास्तव में समाधान चाहता है तो विकासशील देशों को स्वच्छ ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकी, अनुकूलन और आपदा-रोधी ढांचे के लिए पर्याप्त वित्तीय एवं तकनीकी सहायता देनी होगी। इसी संदर्भ में तुर्किये के अंताल्या में चल रहा सीओपी-31 महत्वपूर्ण है। सम्मेलन 9 से 20 नवंबर 2026 तक हो रहा है और इसका घोषित उद्देश्य जलवायु समाधानों के क्रियान्वयन तथा वैश्विक ऊर्जा संक्रमण को गति देना है। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या इस बार दुनिया घोषणाओं से आगे बढ़कर वास्तविक कार्रवाई करेगी?

पिछले अनेक जलवायु सम्मेलनों में महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित हुए, लेकिन वास्तविक क्रियान्वयन की गति अपेक्षाकृत धीमी रही। आज आवश्यकता नए संकल्पों की संख्या बढ़ाने की नहीं, बल्कि पुराने संकल्पों को धरातल पर उतारने की है। विकसित देशों को वित्तीय दायित्वों को गंभीरता से लेना होगा। विकासशील देशों को तकनीक और संसाधन उपलब्ध कराने होंगे। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता घटाकर सौर, पवन, जल और अन्य स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को तेजी से बढ़ाना होगा। शहरों की नियोजन व्यवस्था, सार्वजनिक परिवहन, भवन निर्माण, कृषि और उद्योग-हर क्षेत्र को जलवायु अनुकूल बनाना होगा। क्योंकि अब सवाल यह नहीं है कि जलवायु परिवर्तन हो रहा है या नहीं। सवाल यह है कि हम इसके सामने कितनी जल्दी और कितनी ईमानदारी से खड़े होते हैं।

(लेखक - ललित गर्ग, लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

नहाय-खाय के साथ शुरू हुआ लोक आस्था का महापर्व छठ, घरों से घाटों तक दिखने लगी रौनक

चार दिनों तक चलेगा सूर्यदेव की उपासना का पर्व



जबलपुर,यशभारत। लोक आस्था का चार दिवसीय महापर्व छठ शुक्रवार को नहाय-खाय के साथ शुरू हो गया। पर्व को लेकर शहर में रहने वाले बिहार और उत्तर प्रदेश मूल के परिवारों में खासा उत्साह है। घरों से लेकर पूजा स्थलों तक तैयारियां दिखाई देने लगी हैं। जबलपुर में छठ पूजा का विस्तार अब किसी एक घाट या क्षेत्र तक सीमित नहीं है। नर्मदा के घाटों से लेकर शहर के अलग-अलग तालाबों और जलस्रोतों तक सूर्यदेव की आराधना की जा रही है।

छठ महासंघ के अनुसार शहर में करीब 18 स्थानों पर पूजा की व्यवस्था की गई है। छठ पर्व के पहले दिन नहाय-खाय पर व्रतियों ने स्नान और घरों की साफ-सफाई के बाद सात्विक भोजन ग्रहण कर व्रत का संकल्प लिया। वहीं गौरीघाट, तिलवाराघाट, भटौली घाट और अधारताल तालाब सहित अन्य प्रमुख घाटों और जलस्रोतों पर सुबह से ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिली। पूजा की तैयारियों और पर्व को लेकर लोगों में खासा उत्साह नजर आया। परिवार के सदस्य भी घाटों पर पहुंचकर व्यवस्थाओं में जुटे रहे। शनिवार,14 नवंबर को पर्व के दूसरे दिन खरना होगा। इस दिन व्रती पूरे दिन उपवास रखकर शाम को पूजा-अर्चना के बाद प्रसाद ग्रहण करेंगे। इसके बाद निर्जला व्रत शुरू होगा। रविवार, 15 नवंबर को छठ पूजा का मुख्य आयोजन होगा। व्रती दिनभर उपवास रखकर शाम को जलस्रोतों और घाटों पर पहुंचेंगे तथा अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित करेंगे। बांस के सूप और टोकरी में फल, नारियल, ठेकुआ सहित पूजन सामग्री सजाकर सूर्यदेव की आराधना की जाएगी। सोमवार, 16 नवंबर को उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ चार दिवसीय व्रत का समापन होगा।

शहर के 18 स्थानों पर होगी पूजा

जबलपुर में छठ पूजा का आयोजन शहर के अलग-अलग इलाकों में सामूहिक रूप से किया जाता है। छठ महासंघ की ओर से जारी प्रमुख पूजा स्थलों की सूची में गौरीघाट, तिलवाराघाट, भटौली घाट, अधारताल तालाब, हनुमानताल, पुराना कंचनपुर तालाब, रांझी एसएएफतालाब, मानेगांव तालाब और ईस्टलैंड खमरिया तालाब शामिल हैं। इसके अलावा घाना खमरिया तालाब, मढ़ई तालाब बिलपुरा, उदय नगर तालाब, तीन पुलिया न्यू कंचनपुर, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी महाराजपुर, चांदमारी तलैया, टेलीग्राफकॉलोनी रानीताल, गुलौआ चौक और संजीवनी नगर के शाही तालाब में भी पूजा की व्यवस्था की गई है।

अस्त और उदय होते सूर्य को अर्घ्य देने की परंपरा

छठ पर्व में सूर्यदेव के साथ छठी मैया की पूजा का विशेष महत्व है। इस पर्व की खासियत है कि इसमें डूबते और उगते दोनों सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। श्रद्धालु संतान की सुख-समृद्धि, अच्छे स्वास्थ्य और परिवार की खुशहाली की कामना के साथ कठिन निर्जला व्रत रखते हैं। चार दिनों तक चलने वाला यह पर्व आस्था, अनुशासन, स्वच्छता और सामाजिक एकजुटता का प्रतीक है।

आज से शुरू हुआ मोतियाबिंद जांच अभियान, मेडिकल में होंगे ऑपरेशन

23 दिसंबर तक जिले के 14 स्थानों पर लगेंगे शिविर

जबलपुर,यशभारत। ग्रामीण क्षेत्रों में मोतियाबिंद से पीड़ित मरीजों को बेहतर उपचार उपलब्ध कराने के लिए नेताजी सुभाष चंद्र बोस मेडिकल कॉलेज द्वारा विशेष अभियान शुक्रवार से शुरू कर दिया गया है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत जिला अंधत्व नियंत्रण समिति और मेडिकल कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में 13 नवंबर से 23 दिसंबर तक जिले के विभिन्न विकासखंडों में नेत्र जांच शिविर लगाए जाएंगे। शिविरों में जांच के दौरान मोतियाबिंद से पीड़ित पाए जाने वाले मरीजों को मेडिकल कॉलेज में निःशुल्क ऑपरेशन और लेंस प्रत्यारोपण की सुविधा मिलेगी। मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. नवनीत सक्सेना और अधीक्षक डॉ. अरविंद शर्मा के निर्देशन में नेत्र रोग विभागाध्यक्ष डॉ. पद्मिनी वरखेड़े के नेतृत्व में विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचकर मरीजों की जांच कर रही है। अभियान का उद्देश्य उन जरूरतमंद मरीजों तक नेत्र चिकित्सा की सुविधा पहुंचाना है, जो आर्थिक या अन्य कारणों से समय पर उपचार नहीं करा पाते। इसके अलावा अस्पताल में रहने, भोजन, दवाइयों और लेंस प्रत्यारोपण का खर्च भी मरीजों से नहीं लिया जाएगा।

23 दिसंबर तक यहां लगेंगे शिविर

नवंबर में 13 नवंबर को बरगी, 16 नवंबर को सिहोरा, 19 नवंबर को मझौली, 25 नवंबर को पाटन, 27 नवंबर को पनागर और 30 नवंबर को शहपुरा में शिविर आयोजित होंगे। दिसंबर में 1 तारीख को बरेला, 3 को चरगवां, 7 को कुंडम, 10 को बेलखेड़ा, 14 को बरगी, 17 को मझगवां, 21 को सिहोरा और 23 दिसंबर को पाटन में जांच शिविर लगाए जाएंगे। मेडिकल कॉलेज प्रबंधन ने ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिकों से निर्धारित तिथियों पर शिविरों में पहुंचकर आंखों की जांच कराने और इस निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधा का लाभ उठाने की अपील की है।

केलवा के पात पर उगेलन सुरुजदेव' एवं 'काँच ही बाँस के बहंगिया

पमरे के प्रमुख स्टेशनों पर गूंज रहे छठी मैया के पारंपरिक गीत



जबलपुर यशभारत। लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा के अवसर पर पश्चिम मध्य रेल द्वारा यात्रियों को पर्व की परंपरा, संस्कृति एवं उल्लास से जोड़ने के लिए विशेष पहल की गई है। इसके तहत जबलपुर, भोपाल एवं कोटा मंडलों के प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से छठ महापर्व के पारंपरिक लोकगीतों का प्रसारण किया जा रहा है।

इन स्टेशनों में गीतों से वातावरण भक्तिमय हो रहा- जबलपुर मंडल के जबलपुर, मदन महल, कटनी, सतना, मैहर, नरसिंहपुर, पिपरिया, सागर, दमोह एवं रीवा, भोपाल मंडल के भोपाल, रानी कमलापति, इटारसी, बीना एवं गुना तथा कोटा मंडल के कोटा, गंगापुर सिटी, झालावाड़ सिटी, बारां, भरतपुर एवं सवाई माधोपुर सहित प्रमुख स्टेशनों पर छठी मैया के पारंपरिक गीतों से वातावरण भक्तिमय हो रहा है। 'केलवा के पात पर उगेलन सुरुजदेव' एवं 'काँच ही बाँस के बहंगिया' जैसे लोकप्रिय गीत विशेष रूप से बिहार एवं पूर्वांचल की ओर यात्रा कर रहे यात्रियों को अपनी संस्कृति और घर-परिवार से जुड़ाव का सुखद एहसास करा रहे हैं।



अनंत ब्राह्मण महासभा का परिचय सम्मेलन 15 को

जबलपुर, यशभारत। आगामी 15 नवंबर, रविवार को अनंत ब्राह्मण महासभा द्वारा जबलपुर में एक भव्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है। संस्था के राष्ट्रीय संस्थापक एडवोकेट अखिलेश उपाध्याय और राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित के. के. शर्मा ने बताया कि इस सम्मेलन का पंजीयन पूर्णतया निःशुल्क रखा गया है। इस वर्ष पिछले वर्ष के मुकाबले युवतियों के प्रस्ताव अधिक प्राप्त हुए हैं, तथा बाहर से आने वाली युवतियों के ठहरने की निःशुल्क व्यवस्था महासभा द्वारा की गई है। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और भगवान परशुराम के पूजन के साथ होगा, जिसके बाद उपस्थित युवक-युवतियों के बायोडाटा का वाचन किया जाएगा। इस अवसर पर 'स्नेह बंधन-2026' पत्रिका का विमोचन भी विशेष रूप से किया जाएगा। पंडित एस.के. पचौरी ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य योग्य जीवनसाथी की तलाश कर रहे युवाओं को सही मंच प्रदान करना है। कार्यक्रम के अंत में दोपहर भोज और शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

पूर्व सैनिकों के आरक्षण का मुद्दा गरमाया, 40 हजार जवानों को नौकरी देने की मांग

मेजर जनरल श्याम श्रीवास्तव ने सरकार की नीति पर उठाए सवाल



भोपाल,यश भारत। मध्यप्रदेश में पूर्व सैनिकों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण और प्राथमिकता देने की मांग तेज हो गई है। सेवानिवृत्त मेजर जनरल श्याम श्रीवास्तव ने प्रदेश सरकार से पूर्व सैनिकों के हित में ठोस नीति बनाने की मांग की है। उन्होंने दावा किया कि प्रदेश में वर्ष 2019 तक ग्रुप-सी में 10 प्रतिशत और ग्रुप डी में 20 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान था लेकिन नियमों में बदलाव के बाद पिछले छह वर्षों में महज 5 से 6 पूर्व सैनिकों को ही इसका लाभ मिला है। श्रीवास्तव के अनुसार प्रदेश में करीब 40 हजार पूर्व सैनिक रोजगार की तलाश में हैं। अधिकांश सैनिक 15 से 17 साल की सेवा के बाद 35 से 40 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्त हो जाते हैं। ऐसे में परिवार की जिम्मेदारियों के बीच उन्हें रोजगार की आवश्यकता होती है। उन्होंने अग्निवीर योजना के तहत 25 प्रतिशत जवानों को नियमित करने और शेष 75 प्रतिशत के भविष्य पर भी सवाल उठाए।

नगर निगम की वर्कशॉप पर उठे सवाल, क्रेन से खींचकर ले जाई जा रहीं कचरा गाड़ियां

आधी से ज्यादा गाड़ियां खराब होने का आरोप, समय पर मेंटेनेंस नहीं होने से व्यवस्था पर उठे सवाल

भोपाल,यश भारत।



राजधानी में नगर निगम की कचरा गाड़ियों की बदहाल स्थिति सामने आने के बाद निगम की वर्कशॉप की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो रहे हैं। हालात ऐसे हैं कि खराब होने वाली कचरा गाड़ियों का समय पर मेंटेनेंस कराने के बजाय अब पूरी तरह बंद हो चुकी गाड़ियों को क्रेन की मदद से खींचकर ले जाना पड़ रहा है। इस स्थिति ने नगर निगम की वर्कशॉप में तैनात अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। आखिर गाड़ियों का नियमित रखरखाव क्यों नहीं किया जा रहा, छोटी-मोटी खराबियों को समय रहते ठीक क्यों नहीं कराया जा रहा आरोप है कि नगर निगम की आधी से ज्यादा कचरा गाड़ियां खराब होकर बर्बादी की कगार पर पहुंच चुकी हैं। यदि समय रहते इन वाहनों का मेंटेनेंस किया जाता तो शायद इन्हें इस स्थिति तक पहुंचने से रोका जा सकता था। अब सवाल यह है कि जब नगर निगम के पास वाहनों के रखरखाव के लिए वर्कशॉप और कर्मचारी मौजूद हैं, तो फिर गाड़ियों को क्रेन से खींचकर ले जाने की नौबत क्यों आ रही है इस पूरे मामले में जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय होना जरूरी है।

भाई दूज पर लाड़ली बहनों को मोहन सरकार का बड़ा तोहफा

शिवपुरी में सिंगल क्लिक से जारी हुई 42वीं किस्त

भोपाल, यशभारत।



मध्य प्रदेश की लाड़ली बहनों के लिए भाई दूज का दिन खुशियों की बड़ी सौगात लेकर आया। दीपावली के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शिवपुरी जिले के पिछोर में आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम में सिंगल क्लिक के माध्यम से प्रदेश की लाखों पात्र महिलाओं के बैंक खातों में 1,831 करोड़ रुपये से अधिक की राशि सफलतापूर्वक अंतरित कर दी है। भाई दूज के पावन अवसर पर सरकार की ओर से मिली इस आर्थिक सहायता से महिलाओं में भारी उत्साह देखा गया। लंबे समय से 42वीं किस्त का इंतजार कर रही महिलाओं के खातों में राशि पहुँचने से उन्हें घरेलू जरूरतों, बच्चों की पढ़ाई और अन्य आवश्यक खर्चों को पूरा करने में बड़ी राहत मिली है। शिवपुरी के पिछोर में हुए इस भव्य राज्यस्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने प्रदेशभर की हितग्राहियों को संबोधित करते हुए महिला सशक्तिकरण और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सरकार के संकल्प को दोहराया। सरकार की इस प्रमुख योजना के तहत हर महीने सीधे बैंक खातों में राशि पहुँचने से महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत हो रही हैं।

पराली प्रबंधन को लेकर देर से जागा प्रशासन, खेतों में उतरकर जानी हकीकत

जबलपुर, यश भारत

यशभारत
खबर का असर

खेतों में पराली (फसल अवशेष) प्रबंधन को लेकर यश भारत की खबरों का अब बड़ा असर देखने को मिला है। प्रशासनिक सुस्ती और संसाधनों की कमी पर सवाल उठने के बाद जिला कलेक्टर अरुण कुमार विश्वकर्मा खुद एक्शन मोड में नजर आए और गुरुवार को मैदानी निरीक्षण के लिए निकल पड़े। उन्होंने पनागर विकासखंड के ग्राम उमरिया चौबे और ग्राम नुनिया कला पहुंचकर पराली प्रबंधन के कार्यों का जायजा लिया।

ट्रैक्टर पर बैठकर देखी प्रक्रिया किसानों से की चर्चा

कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने खेतों का भ्रमण कर फसल कटाई के बाद बचने वाले अवशेषों के प्रबंधन के कार्यों का बारीकी से निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने खेत में स्वयं ट्रैक्टर पर बैठकर बेलर यूनिट से पराली संग्रहण के कार्य को करीब से देखा तथा सुपर सीडर एवं हैप्पी सीडर के माध्यम से बिना पराली जलाए बोनी किए जाने की प्रक्रिया का भी जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने किसानों से सीधे चर्चा कर पराली प्रबंधन के लिए अपनाई जा रही तकनीकों और उनके अनुभवों की जानकारी ली। उन्होंने किसानों को समझाइश दी कि पराली जलाने से खेत की उर्वरा शक्ति प्रभावित होती है और पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचता है। फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन कर आधुनिक कृषि यंत्रों के माध्यम से बिना पराली जलाए अगली फसल की बोनी की जा सकती है।

कृषि यंत्र संचालकों और अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

कलेक्टर ने मौके पर मौजूद बेलर यूनिट एवं कृषि यंत्र संचालकों से भी संवाद किया। इस दौरान किसानों और संचालकों ने कृषि कार्यों के लिए आवश्यक संसाधनों की समय पर उपलब्धता तथा खेतों में नमी की स्थिति के अनुसार बोनी करने में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों से उन्हें अवगत कराया। किसानों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे कृषक संगठनों के साथ बैठक कर किसानों की समस्याओं पर चर्चा करें और उनके समाधान के लिए समन्वित प्रयास करें। उन्होंने किसानों को पराली प्रबंधन के लिए समय पर बेलर यूनिट उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया।



कलेक्टर ने कहा कि किसानों की बोनी समय पर सुनिश्चित करने के साथ फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन भी जरूरी है। इसके लिए किसानों, कृषि विभाग और कृषि यंत्र संचालकों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया जाए ताकि खेती को लाभकारी बनाने के साथ पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य को भी हासिल किया जा सके। निरीक्षण के दौरान ग्रामीण एसडीएम कलावती ब्यारे, कृषि यंत्री जीसी मर्सकोले, कृषि उप संचालक उमेश कटहरे तथा संबंधित अधिकारी एवं बड़ी संख्या में किसान उपस्थित थे।



दीनदयाल रसोई में परखी भोजन की गुणवत्ता

जबलपुर, यशभारत।

मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत जबलपुर कैंट विधानसभा क्षेत्र में अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों का दौरा जारी रहा। इसी क्रम में विधायक अशोक रोहाणी और महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू ने कलेक्टर अरुण कुमार विश्वकर्मा, पुलिस अधीक्षक संपत उपाध्याय तथा नगर निगम आयुक्त अग्रिम कुमार के साथ बड़ा पत्थर, रांझी स्थित दीनदयाल अंत्योदय रसोई का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान टीम ने रसोई में भोजन करने वाले आम नागरिकों से सीधे संवाद कर व्यवस्थाओं का फीडबैक लिया और मिलने वाले खाने की गुणवत्ता को परखा। हालात का जायजा लेने के बाद सभी ने रसोई के अंदर पहुंचकर खाना बनने की प्रक्रिया को भी देखा। खास बात यह रही कि औपचारिकता निभाने के बजाय इन सभी ने आम जनता के साथ जमीन पर बैठकर खुद भी वही भोजन किया, जिससे भोजन की असल गुणवत्ता और स्वाद सीधे तौर पर परखा जा सके।

स्वास्थ्य सेवाओं का लिया जायजा

इसी दौरे की अगली कड़ी में मुख्यमंत्री जन-विश्वास अभियान के तहत ही अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों का दल शहीद भगत सिंह वार्ड क्रमांक 63 के अंतर्गत सर्रा पीपल पहुंचा। यहां स्थित मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक का निरीक्षण करते हुए स्थानीय स्तर पर मिलने वाली स्वास्थ्य सेवाओं की हकीकत टटोली गई। दौरे के दौरान क्लीनिक में मरीजों के लिए उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं, डॉक्टरों की उपलब्धता और आम नागरिकों को दी जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की विस्तार से जानकारी ली गई, ताकि क्षेत्र के लोगों को बेहतर इलाज सुलभ हो सके।



बच्चे की याददाश्त ऐसे बढ़ेगी

नई दिल्ली, एजेंसी। बच्चे की याददाश्त बचपन से ही तेज कैसे रखी जाए। यह बात सभी अभिभाव सोचते हैं। इसके लिए अधिकतर लोग बेहतर खानपान पर जोर देते हैं पर इतना ही काफी नहीं है। याददाश्त बढ़ाने के लिए आपको बच्चे के साथ कुछ छोटी-छोटी दिमागी कसरतें भी करनी होगीं। मान लीजिये अगर आप कहीं घूमने गये हैं और वहां किसी रेस्टोरेंट में खाना खाने गए तो लौटकर उससे जुड़े सवाल करें। घर लौटने के बाद आप बच्चे से रेस्टोरेंट से जुड़ी कुछ बातें पूछिए। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि आप जो सवाल बच्चों से पूछें उनके जवाब आपको भी याद हों। जैसे रेस्टोरेंट में आप किस और बैठे थे वहां किस रंग की फोटो लगी थी या उससे जुड़े कोई खास सवाल। ध्यान रहे ये जवाब आप को भी आने चाहिये। लेफ्ट-राइट एक्सरसाइज याददाश्त बढ़ाने का बेहद खास तरीका है। इसमें बच्चे के सामने कई सारे खिलौने रखे होते हैं और उन्हें उन खिलौनों को दाईं या बाईं ओर रखने के लिए कहा जाता है। उदाहरण के लिए बच्चे को कुछ गेंदें दीजिए और उन्हें दाईं ओर रखी टोकरी में रखने के लिए कहिए। दूसरे दिन भी उसे गेंद को वहीं रखने के लिए कहिए, पर तीसरे दिन गेंदों को बाईं ओर रखने के लिए कह दीजिए। बच्चे का हाथ पहले दाईं ओर ही बढ़ेगा। पर, लगातार इस तरह के एक्सरसाइज से उसकी मानसिक सतर्कता और याददाश्त मजबूत होगी।' जैसा कि आप जानती ही हैं कि अंग्रेजी में दो तरह के अक्षर होते हैं, स्वर और व्यंजन। अब पढ़ाई के बाद आपको बच्चे के साथ इन्हीं वॉवेल से जुड़ा खेल खेलना है। कागज पर एक बॉक्स बनाएं और उसमें अंग्रेजी के कुछ अक्षर लिखें। बच्चे से उन शब्दों को काटने के लिए कहें, जिसमें वॉवेल न हों। इस तरह से बच्चे की अंग्रेजी तो अच्छी होगी ही, उसकी दिमागी एक्सरसाइज भी होगी।

घर के कामों में लगाएं

किचेन में काम करते हुए बच्चे को भी काम में शामिल कीजिए। उन्हें कुकिंग से जुड़े छोटे-छोटे काम करने के लिए बोलें ताकि वो जान जाएं कि कौन-सी चीज कहां रखी है? अब अगले दिन उन्हें फिर से वही चीजें आपको रसोई से लाकर देने के लिए कहें। इससे होगा यह कि आपको पता चलेगा कि चीजें कहां रखी हैं, बच्चे को यह याद भी है या नहीं। जैसे आप बच्चे से प्याज लाने के लिए बोलिए। अगले दिन जब वो फिर यही काम करेगा तो दिमाग पर जोर डालेगा कि मां ने प्याज कहां रखे थे।

नंबर गेम का कमाल

डिजिट स्पैन मतलब वो एक्सरसाइज जो बच्चे की याददाश्त बढ़ाने में मदद कर सकती हैं। इसके लिए बच्चे के सामने कुछ अंक बोलिए और उन्हें याद करने के लिए कहिए। अगले दिन बच्चे को आपको वो सारे अंक बताने होंगे। इसके लिए फोन नंबर का इस्तेमाल किया जा सकता है। आप कोई ऐसा नंबर बच्चे के सामने बोलिए जो उसे याद कराना ही हो। अब अगले कुछ दिनों तक बच्चे से वह नंबर नियमित रूप से पूछती रहें। खेल-खेल में उसकी याददाश्त बढ़ेगी।'

बच्चे को जंक फूड नहीं पौष्टिक भोजन खाने प्रेरित करें

__नई दिल्ली, एजेंसी।__ स्वस्थ खाना, बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बेहद जरूरी है। स्वस्थ खाने से बच्चे ऊर्जावान बने रहते हैं तथा बच्चों का दिमाग भी तेज होता है। बच्चों में स्वस्थ खाने की आदत भी परिवार के सदस्य ही डाल सकते हैं। ऐसे में यह बेहद जरूरी है कि बच्चों को हर खाद्य पदार्थ के अच्छे और बुरे पहलुओं से अवगत कराया जाए जिससे बच्चों में बचपन से ही स्वस्थ और अच्छे खान पान की आदत बन जाए।



जंक फूड के नुकसान

जंक फूड की ओर बच्चे जल्दी आकर्षित होते हैं लेकिन बच्चों को यह बताना बेहद जरूरी है कि जंक फूड शरीर को किसी भी मायने में फायदा नहीं पहुंचाता। बच्चों को वही भोजन देना चाहिए जो पोषक तत्वों से भरपूर हो। अच्छे पोषक तत्व मोटापा, कमजोर हड्डियां आदि से बचने में सहायता करते हैं।

बच्चों के लिए आवश्यक पोषक तत्व

बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए जरूरी है कि हम ऐसे आहार का पालन करें जिससे बच्चें को पूरे पोषण मिल सकें। इसके लिए नीचे दिए गए डाइट प्लान का भी पालन किया जा सकता है।

होल ग्रेन - इसके अंतर्गत बच्चों को व्हीट पेन केक, मल्टीग्रेन टोस्ट, व्हीट ब्रेड का सैंडविच, ब्राउन राइस आदि दिए जा सकते हैं। अन्य होल ग्रेन भी बच्चों को स्वादिष्ट रूप में दिए जा सकते हैं। अनाज का दलिया, अनाज का आटा, मक्का और गेहूं की रोटियां आदि दी जा सकती हैं।

प्रोटीन - बच्चों को प्रोटीन की वैरायटी आहार के रूप में लेने के लिए प्रोत्साहित करें जैसे अंडे, मछली, चिकन, बेक्ड बीन और दालें आदि।

विटामिन और खनिज - विटामिन और खनिज की आपूर्ति के लिए एक बार चिकित्सक से परामर्श करें। बच्चे के वजन और आयु के हिसाब से बेहतर परामर्श मिल सकेगा।

आयरन - आयरन खून बनने के लिए एक महत्त्वपूर्ण खनिज है। हरी पत्तेदार सब्जी, आयरन के अच्छे स्त्रोत हैं। रोजाना बच्चों के भोजन का एक हिस्सा हरी सब्जियों का होना चाहिए।

फल और सब्जियां - फल और सब्जियों को स्नैक्स के तौर पर भी दिया जा सकता है। इसके अलावा सब्जियों का सूप बनाकर भी दिया जा सकता है। फल और सब्जियों में विटामिन और खनिज की मात्रा ज्यादा होती है। विटामिन और खनिज स्वस्थ त्वचा, अच्छी ग्रोथ, विकास और संक्रमण से लड़ने के लिए आवश्यक हैं। सब्जियों में फाइबर भरपूर मात्रा में होती है जिसमें विटामिन ए, सी और सुक्ष्म पोषक जैसे मैग्नीशियम और पोटेशियम पाया जाता है। सब्जियों में एंटीऑक्सीडेंट भी पाया जाता है जो बच्चों के शरीर को बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है। विटामिन बी से भरपूर खाना साबुत अनाज, मांस और डेयरी प्रोडेक्टस है।

दूध और डेयरी उत्पाद - पनीर, दही, दूध से बनी पुडिंग आदि को शामिल करें। फुल क्रीम दूध भी बच्चों को दिया जा सकता है।

चीनी की मात्रा कम करें।

बच्चों को आर्टिफिशियल शुगर लेने से रोकें, जैसे आर्टिफिशियल ड्रिंक, जूस आदि

किसी भी भोज्य पदार्थ को कम चीनी के साथ स्वादिष्ट बनाकर बच्चों को खिलाने की आदत डालें।

प्रोसेस्ड फूड से बच्चों को दूर रखें जैसे कि सफेद ब्रेड और केक आदि।

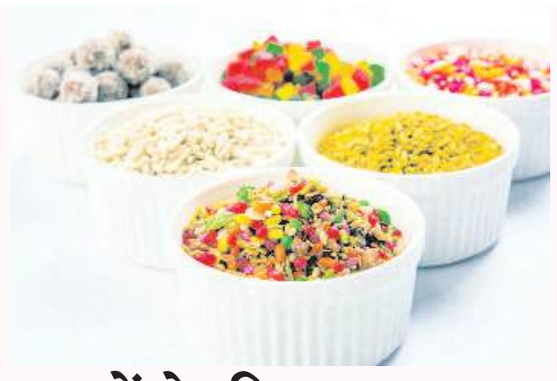
घर पर फलों और सब्जीयों को डालकर फ्रोजन करें और बच्चों की ड्रिंक्स में मिलाएं। बच्चों को घर पर ताजा जूस तैयार करके दें।

नमक की मात्रा कम करें

एक टी-स्पून चम्मच में 2300 मिलीग्राम सोडियम होता है। ऐसे में बच्चों को कम नमक दें।

रेस्टोरेंट, प्रोसेस्ड और पैक्ड फूड से बच्चों को दूर रखें। ऐसे भोज्य पदार्थों में सोडियम होता है जो बच्चों को नुकसान पहुंचाता है।

डिब्बाबंद सब्जियों और फलों की जगह ताजे फल और सब्जियां खाने को दें। आलू चिप्स, फिंगर चिप्स आदि को कम खिलाएं।



बच्चों के लिए इस प्रकार बनाये माउथ-फ्रेशनर

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आज मानते हैं कि माउथ फ्रेशनर की आवश्यकता केवल बड़ों को होती है तो अपना विचार बदल दें। इसका कारण है कि बच्चों के भी दांत खराब हो सकते हैं इसलिए हमारी तरह ही छोटे बच्चों को भी माउथ फ्रेशनर की आवश्यकता होती है पर बाजार में बिकने वाले माउथ फ्रेशनर उनके लिए नुकसानदेह हो सकते हैं क्योंकि उनमें बहुत अधिक मात्रा में रसायन होते हैं। ऐसे में उनके लिए एक ऐसा माउथ फ्रेशनर होना चाहिए जो पूरी तरह प्राकृतिक हो और स्वाद में भी कड़वा न हो। आप चाहें तो अपने बच्चों के लिए घर पर ही माउथ फ्रेशनर तैयार कर सकती हैं। अनार के छिलकों का इस्तेमाल करके माउथ फ्रेशनर बनाया जा सकता है। ये माउथ फ्रेशनर न केवल बच्चों के लिए फायदेमंद रहेगा बल्कि बड़े भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं. अनार के छिलके में एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुण पाया जाता है, जो ओरल हेल्थ के लिए अच्छा होता है। अनार के छिलके से तैयार माउथ फ्रेशनर मुंह के अल्सर और मुंह की दुर्गंध को दूर करने का काम करता है। अनार का एंटी-माइक्रोबायल एक्टिविटी स्ट्रेप्टोकोक्स म्यूटेन बैक्टीरि?या को पनपने नहीं देता है. कैसे तैयार करें अनार के छिलके का माउथ फ्रेशनर? अनार को काटकर उसके दानों को सफाई से निकाल लें. अनार के छिलके को धूप में सूखने के लिए रख दें। जब छिलके पूरी तरह सूख जाएं तो उन्हें पीसकर पाउडर तैयार कर लें। एक गिलास पानी में एक चम्मच इस पाउडर को मिलाकर उबालें। इसे ठंडा होने दें। जब ये घोल ठंडा हो जाए तो इस छान लें। इस तरल को किसी जार या शीशी में भरकर रख दें।

बच्चों के इन खिलौनों से रहे सावधान

नई दिल्ली, एजेंसी। घर में छोटे बच्चे हो तो हर सदस्य का ध्यान उसकी तरफ ही रहता है। बच्चे के लिए घर में कई तरह के खिलौने भी लाए जाते हैं। उसके लिए साइकिल,वॉकर,छोटे-छोटे खिलौने ला कर रख दिये जाते हैं। कई बार बच्चे के प्यार में जाने-अनजाने अभिभावक कुछ ऐसी गलतियां कर बैठते हैं,जिससे बच्चे की सेहत को नुकसान पहुंच सकता है। आपके घर में भी छोटा बच्चा है। तो इन बातों पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। आपके लिए जानना जरूरी है कि कौन से बच्चों के उत्पाद नुकसान पहुंचा रहे हैं।

टीथर

बच्चे रंग-बिरंगे खिलौने देखकर बहुत खुश होते हैं और हर चीज को मुंह में डालते हैं। आप शायद इस बात को नजरअंदाज कर रहे हैं कि इस खिलौने से बच्चे को संक्रमण होने का डर रहता है। बच्चे को यह खिलौने देने से पहले इस पर धूल मिट्टी के कण पड़े होते हैं। जिसे बहुत से लोग बार-बार साफ नहीं करते और कई बार तो बडे लोगों के हाथ के कीटाणु भी इस पर लग जाते हैं। जिससे बच्चे को उल्टी, पेटदर्द, दस्त जैसी समस्याओं का



सामना करना पड़ सकता है।

वाकर

बच्चा जल्दी चलना सीख लें इसलिए ज्यादातर लोग बच्चे को वॉकर लाकर दे देते हैं। माना जाता है कि इसमें बैठकर वह जल्दी चलना सीख जाते हैं और मांसपेशियां भी मजबूत होती हैं। एक शोध में यह बात सामने आई है कि इससे बच्चे को खुद का बैलेंस बनाने में परेशानी होने लगती है। वह डर-डर कर जमीन पर अपने पांव रखता है।

दूध की बोतल

छोटे बच्चे के लिए मां का दूध ही सही आहार है। कुछ कामकाजी औरतें बच्चे बोतल से दूध पिलाती हैं। इससे बच्चे के पेट में हवा भर जाती है,जिससे उसे पेट गैस की परेशानी हो सकती है। अगर बोतल में दूध पिला रहे हैं तो साफ-सफाई का भी बहुत ध्यान रखने की जरूरत है। दूध पिलाने से पहले बोतल को जरूर उबाल लें।

सोने पर आयात शुल्क बढ़ने से तस्करी में 16 गुना वृद्धि कुल आपूर्ति का 37 फीसदी हिस्सा अवैध रास्तों से आया

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में सोने पर आयात शुल्क बढ़ाए जाने के बाद इसकी तस्करी में भारी उछाल आया है। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल (डब्ल्यूजीसी) की रिपोर्ट के मुताबिक, जुलाई से सितंबर 2026 की तिमाही में देश में सोने की तस्करी बढ़कर करीब 50 टन हो गई, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह आंकड़ा लगभग तीन टन था। इस तरह तस्करी में 16 गुना से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है। रिपोर्ट के अनुसार, सरकार की ओर से आयात शुल्क छह फीसदी से बढ़ाकर 15 फीसदी किए जाने के बाद अवैध तरीके से सोना लाने की गतिविधियां बढ़ी हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि जुलाई-सितंबर तिमाही के दौरान भारत में सोने की कुल आपूर्ति 136 टन रही। इसमें से करीब 50 टन सोना अवैध रास्तों से देश में पहुंचा, जो कुल आपूर्ति का लगभग 37 फीसदी है। दूसरी ओर, आधिकारिक माध्यमों से सोने का आयात 70 फीसदी घटकर 64 टन रह गया। आंकड़े बताते हैं कि आयात शुल्क बढ़ने के बाद कानूनी माध्यम से सोना मंगाने की लागत बढ़ी है और बाजार में अवैध आपूर्ति का हिस्सा भी बढ़ा है। डब्ल्यूजीसी के मुताबिक, भारत में एक किलो सोने की कीमत करीब



1.49 करोड़ रुपये होने पर उस पर लगभग 19.4 लाख रुपये का आयात शुल्क देना पड़ता है। तस्करी के जरिए सोना लाने वाले लोग इस शुल्क से बच जाते हैं। यदि वे तीन फीसदी वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का भुगतान भी नहीं करते, तो उनकी कुल बचत करीब 24 लाख रुपये तक पहुंच सकती है। इतनी बड़ी रकम बचने के कारण अवैध तरीके से सोने की आपूर्ति करने वालों को आर्थिक लाभ मिलता है। जानकारों का कहना है कि आयात शुल्क बढ़ने के बाद घरेलू बाजार में सोने की कीमतों में डिस्काउंट देखने को मिला है। बाजार में कानूनी रूप से आयात किए गए सोने की लागत और वास्तविक बिक्री कीमत के बीच अंतर बढ़ना इस बात का संकेत माना जा रहा है कि बिना शुल्क चुकाया गया सोना बाजार में पहुंच रहा है। हालांकि, कीमतों में अंतर अपने आप में तस्करी का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, लेकिन डब्ल्यूजीसी ने इसे अवैध आपूर्ति बढ़ने से जुड़ा महत्वपूर्ण संकेत बताया है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने सरकार से सोने पर सीमा शुल्क कम करने की अपील की है। उनका मानना है कि शुल्क घटाने से अवैध कारोबार में मिलने वाला आर्थिक लाभ कम हो सकता है और तस्करी का आकर्षण घटेगा। जानकारों के मुताबिक, जब कानूनी तरीके से सोना आयात करना महंगा हो जाता है, तब अवैध आपूर्ति करने वालों को कीमत के अंतर का फायदा उठाने का अवसर मिलता है। इससे सरकारी राजस्व को भी नुकसान पहुंचने की आशंका रहती है। रिपोर्ट में सोने की कीमतों में आए उतार-चढ़ाव का भी उल्लेख किया गया है। अक्टूबर के अंत में भारत में सोने की कीमत 1,39,830 रुपये प्रति 10 ग्राम रही। इस महीने के दौरान कीमतों में 5.3 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई, जबकि जनवरी में दर्ज रिकॉर्ड ऊंचे स्तर से यह करीब 20 फीसदी नीचे आ गई। हालांकि, साल की शुरुआत से अब तक सोने की कीमतों में कुल 5.4 फीसदी की बढ़ोतरी बनी हुई है।

सरकार ने खुले बाजार में चावल बिक्री का लक्ष्य किया दोगुना



नई दिल्ली, एजेंसी। खाने-पीने की वस्तुओं की लगातार बढ़ती कीमतों के बीच आम जनता को राहत देने के लिए केंद्र सरकार ने खुले बाजार में चावल बेचने का लक्ष्य दोगुना कर दिया है। सरकार अब वित्त वर्ष 2026-27 में खुले बाजार में 50 लाख टन चावल बेचेगी। पहले इसके लिए 25 लाख टन का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। सरकार के इस फैसले का मुख्य उद्देश्य बाजार में चावल की उपलब्धता बढ़ाना और बढ़ती कीमतों पर नियंत्रण रखना है, ताकि उपभोक्ताओं को महंगे चावल से राहत मिल सके। सरकार ने यह निर्णय ऐसे समय में लिया है, जब देश के कई हिस्सों में चावल की खुदरा कीमतों में लगातार बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। चीनी और खाद्य तेल की कीमतों के बाद अब चावल के दाम भी आम लोगों के घरेलू बजट पर असर डाल रहे हैं। ऐसे में सरकार खुले बाजार में अपने भंडार से चावल की अतिरिक्त आपूर्ति करने की तैयारी कर रही है। इससे बाजार में उपलब्धता बढ़ने और कीमतों में स्थिरता आने की उम्मीद है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, ओपन मार्केट सेल स्कीम के तहत 31 अक्टूबर 2026 तक 25 लाख टन चावल पहले ही बेचा जा चुका है। अब सरकार अगले पांच महीनों में अतिरिक्त 25 लाख टन चावल बाजार में उतारेगी। इस तरह चालू वित्त वर्ष में कुल बिक्री का लक्ष्य 50 लाख टन हो जाएगा। सरकार को उम्मीद है कि अतिरिक्त आपूर्ति से उन क्षेत्रों में कीमतों पर दबाव कम होगा, जहां चावल के दाम तेजी से बढ़े हैं। अगस्त से नवंबर के बीच कई राज्यों में चावल की खुदरा कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। महाराष्ट्र में चावल की कीमत 50 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़कर 53 रुपये हो गई है। तमिलनाडु में इसका भाव 59 रुपये से बढ़कर 69 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया है। इसी तरह पश्चिम बंगाल में चावल की कीमत 43 रुपये से बढ़कर 52 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि अलग-अलग राज्यों में उपभोक्ताओं को पहले की तुलना में अधिक कीमत चुकानी पड़ रही है।

जुलाई-सितंबर तिमाही में देश की बेरोजगारी दर घटकर 5.1 फीसदी हुई, ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा सुधार

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में बेरोजगारी की स्थिति में सुधार के संकेत मिले हैं। जुलाई से सितंबर 2026 की तिमाही में भारत की बेरोजगारी दर घटकर 5.1 फीसदी रह गई, जबकि पिछली अप्रैल-जून तिमाही में यह 5.4 फीसदी थी। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की ओर से जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आंकड़ों के अनुसार, इस अवधि में ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है। वहीं शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी दर में मामूली बढ़ोतरी हुई है। सर्वेक्षण के मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर अप्रैल-जून तिमाही के 4.8 फीसदी से घटकर जुलाई-सितंबर में 4.3 फीसदी रह गई। इसके विपरीत शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी दर 6.7



फीसदी से बढ़कर 6.8 फीसदी हो गई। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी कम होने का असर देश की कुल बेरोजगारी दर पर भी दिखाई दिया। हालांकि शहरों में रोजगार की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ और वहां बेरोजगारी दर में हल्की वृद्धि दर्ज की गई। आंकड़ों के अनुसार जुलाई-सितंबर 2026 के दौरान देश में 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के करीब 57.9 करोड़ लोग रोजगार में थे। इनमें लगभग 40.5 करोड़ पुरुष और 17.4 करोड़ महिलाएं शामिल थीं। रोजगार प्राप्त लोगों में पुरुषों की संख्या अधिक रही, लेकिन महिला श्रम बल भागीदारी और रोजगार दर में भी वृद्धि दर्ज की गई। यह बदलाव देश के श्रम बाजार में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है। महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर अप्रैल-जून तिमाही के 33.2 फीसदी से बढ़कर जुलाई-सितंबर में 34.7 फीसदी हो गई। इसी तरह महिलाओं की रोजगार दर भी 31.3 फीसदी से बढ़कर 32.8 फीसदी दर्ज की गई। इससे पता चलता है कि इस अवधि में अधिक महिलाएं श्रम बल से जुड़ीं और रोजगार हासिल करने वाली महिलाओं का अनुपात भी बढ़ा। महिला भागीदारी में यह वृद्धि रोजगार के क्षेत्र में आया एक महत्वपूर्ण बदलाव है।

डिजिटल भुगतान में धोखाधड़ी रोकने बैंकों ने कारोबारियों की जांच सख्त की

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में खरीदारी और डिजिटल लेनदेन का दायरा बढ़ने के साथ ऑनलाइन भुगतान में धोखाधड़ी का खतरा भी तेजी से बढ़ रहा है। साइबर अपराधी भुगतान व्यवस्था की तकनीकी कमजोरियों का फायदा उठाकर लोगों और कारोबारियों की रकम को निशाना बना रहे हैं। इसे देखते हुए बैंकों ने फिनटेक कंपनियों और भुगतान सेवा प्रदाताओं को कारोबारियों की जांच प्रक्रिया सख्त करने के निर्देश दिए हैं। बैंकों का जोर लाभार्थियों के पंजीकरण को मजबूत बनाने और स्वचालित भुगतान प्रणाली पर अतिरिक्त नियंत्रण लगाने पर है। जानकारी के अनुसार, बैंकों ने अपने फिनटेक साझेदारों को भुगतान व्यवस्था से नए कारोबारियों को जोड़ने से पहले उनकी पहचान और कारोबारी गतिविधियों की बेहतर जांच करने की सलाह दी है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भुगतान नेटवर्क का इस्तेमाल किसी संदिग्ध या फर्जी कारोबार के लिए न हो। कारोबारियों की पहचान से जुड़े दस्तावेजों और उनकी गतिविधियों की जांच मजबूत होने से धोखाधड़ी की आशंका को कम किया जा सकता है। त्योहारों के दौरान खरीदारी और डिजिटल भुगतान में तेजी आने से लेनदेन की संख्या भी काफी बढ़ी है। सात नवंबर को यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के माध्यम से 97.5 करोड़ लेनदेन दर्ज किए गए। इतनी बड़ी संख्या में होने वाले डिजिटल लेनदेन के बीच भुगतान व्यवस्था को सुरक्षित बनाए रखना बैंकों और भुगतान सेवा प्रदाताओं के



लिए बड़ी चुनौती बन गया है। इसी वजह से भुगतान प्रणाली से जुड़े तकनीकी माध्यमों की सुरक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। डिजिटल भुगतान में इस्तेमाल होने वाली एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (एपीआई) की सुरक्षा भी चिंता का विषय बनी हुई है। एपीआई विशेष तकनीकी कोड होते हैं, जिन्हें भुगतान कंपनियां अपने कारोबारी ग्राहकों को उपलब्ध कराती हैं। इनके जरिए कारोबारी भुगतान प्राप्त करने के साथ बैंक खातों में बड़ी संख्या में रकम भेजने के निर्देश दे सकते हैं। इस व्यवस्था में हर लेनदेन के लिए अलग से ओटीपी की जरूरत नहीं पड़ती, इसलिए इन कोड की सुरक्षा बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि किसी कारोबारी का सर्वर हैक हो जाता है, तो साइबर अपराधी एपीआई कोड की नकल कर सकते हैं। इसके बाद वे इन कोड का इस्तेमाल करके फर्जी भुगतान निर्देश भेज सकते हैं। ऐसे निर्देशों के जरिए रकम गलत बैंक खातों में पहुंच सकती है। खाते में पैसा पहुंचने के बाद उसे कुछ ही मिनटों में निकाला भी जा सकता है। इससे धोखाधड़ी का पता लगाने और रकम वापस हासिल करने के लिए बहुत कम समय बचता है। इस खतरे से बचने के लिए भुगतान कंपनियां एपीआई कोड नियमित रूप से बदल रही हैं। इसके साथ ही इंटरनेट प्रोटोकॉल (आईपी) एड्रेस पर प्रतिबंध लगाने और अतिरिक्त प्रमाणीकरण व्यवस्था अपनाने जैसे उपाय भी किए जा रहे हैं। इस व्यवस्था के तहत केवल अधिकृत इंटरनेट एड्रेस से आने वाले निर्देश ही स्वीकार किए जा सकेंगे। इससे अनधिकृत माध्यमों से भुगतान संबंधी निर्देश भेजने की आशंका कम हो सकती है। द्वविशेषज्ञों के अनुसार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते इस्तेमाल ने साइबर सुरक्षा की चुनौती को और गंभीर बना दिया है। अब सॉफ्टवेयर की खामियों का पता लगाने और उनका फायदा उठाने के बीच का समय कम हो गया है। ऐसे में साइबर अपराधियों को तकनीकी कमजोरियों का तेजी से दुरुपयोग करने का अवसर मिल सकता है। इस कारण कंपनियों को अपनी सुरक्षा व्यवस्था लगातार अपडेट रखने और तकनीकी खामियों की नियमित जांच करने की जरूरत है।

श्रेयस अय्यर सबसे कम एकदिवसीय खेलकर कप्तानी हासिल करने वाले खिलाड़ियों में शामिल



माउंट माउंगानुई (ईएमएस)। भारतीय क्रिकेट टीम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर न्यूजीलैंड के खिलाफ चौथे एकदिवसीय मुकाबले में भारतीय टीम की कप्तानी संभालते ही एक रिकार्ड अपने नाम किया है। वह एकदिवसीय प्रारुप में कमान संभालने वाले 29 वें कप्तान बने है। यह पहली बार है जब उन्होंने 50 ओवर के प्रारूप में टीम की बागडोर संभाली है। इस अहम भूमिका को निभाने से पहले, श्रेयस ने भारतीय टीम की ओर से 85 एकदिवसीय मैच खेले थे। इस प्रकार वह सबसे कम मैच खेलकर कप्तानी हासिल करने वाले खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गये हैं।

श्रेयस का 85 मैचों के बाद ही एकदिवसीय में कप्तानी संभालना भारतीय क्रिकेट इतिहास में एक रोचक आंकड़ा पेश करता है। भारतीय टीम के कई दिग्गज खिलाड़ियों ने पहली बार एकदिवसीय कप्तानी संभालने से पहले 100 या उससे भी अधिक मैच खेले थे। इस सूची में सबसे ऊपर भारतीय क्रिकेट के महान स्पिनर अनिल कुंबले हैं, जिन्होंने 217 एकदिवसीय मैच खेलने के बाद पहली बार भारत की कमान संभाली थी। इस सूची में वीरेंद्र सहवाग ने सबसे कम 70 एकदिवसीय खेलकर कप्तानी की थी, जबकि हार्दिक पंड्या ने 71 एकदिवसीय खेलने के बाद यह जिम्मेदारी संभाली थी। वहीं महेन्द्र सिंह धोनी ने 81 और सुरेश रैना ने 90 मैच खेलकर कप्तानी संभाली थी। इस तरह, 85 वनडे खेलने के बाद कप्तान बने श्रेयस अय्यर, धोनी (81) और रैना (90) के बीच में आते हैं। दिलीप वेंगसरकर और मोहम्मद अजहरुद्दीन ने 98-98 एकदिवसीय खेलने के बाद कप्तानी हासिल की थी। रोहित शर्मा ने 171 एकदिवसीय , शिखर धवन ने 142 एकदिवसीय और राहुल द्रविड़ ने 138 एकदिवसीय खेलने के बाद इस प्रारुप में कप्तानी हासिल की थी। अजय जड़ेजा ने भी 129 एकदिवसीय खेलकर कप्तानी की भूमिका संभाली थी।वहीं, महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने 119 एकदिवसीय, सौरव गांगुली और के. श्रीकांत ने 111-111 एकदिवसीय, जबकि विराट कोहली ने 104 और गौतम गंभीर ने 100 एकदिवसीय खेलने के बाद ही पहली बार टीम की बागडोर संभाली थी।

डेब्यू मैच में 28 गेंदों में 5 विकेट; 21 साल के महली बियर्डमैन ने इंग्लैंड के खिलाफ मचाई तबाही

पर्थ। ऑस्ट्रेलिया वर्सेस इंग्लैंड पहला वनडे पर्थ में खेला जा रहा है। इस मैच में 21 साल के ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज महली बियर्डमैन महफिल लूट ले गए। उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ मात्र 28 गेंदों में अपना 5 विकेट हॉल लिया। वह डेब्यू मैच में 5 विकेट हॉल लेने दुनिया के 18वें और ऑस्ट्रेलिया के मात्र दूसरे ही गेंदबाज बने हैं। महली बियर्डमैन से पहले ऑस्ट्रेलिया के लिए 1988 में टोनी डोडेमेड ने श्रीलंका के खिलाफ पहली बार यह कारनामा किया था। वहीं दुनिया में ऐसा श्रीलंका के उवैस करनैन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 1984 में किया था। ऐसा नहीं है कि महली ने पुछल्ले बल्लेबाजों के विकेट चटकाए हो, उनके इस 5 विकेट हॉल में जो रूट से लेकर हैरी ब्रूक जैसे धकाड़ बल्लेबाज मौजूद हैं। उन्होंने इन दोनों के अलावा सैम करन, लियाम डेवसन और जॉर्डन क्रॉक का विकेट चटकाया।

महली बियर्डमैन ने अपने वनडे करियर की शुरुआत मेडन ओवर से की थी। दूसरे ओवर में उन्होंने हैरी ब्रूक का तो तीसरे ओवर में जो रूट का विकेट चटकाया। इसके बाद उन्हें चौथे ओवर में जॉर्डन क्रॉक और सैम कुर्रन के रूप में 2 विकेट मिले। उन्होंने अपना 5 विकेट हॉल पांचवें ओवर में ही लियाम डेवसन का विकेट लेकर पूरा किया।

- पहले ओवर में मेडन।
- दूसरे ओवर में 1 विकेट।
- तीसरे ओवर में 1 विकेट।
- चौथे ओवर में 2 विकेट।
- पांचवें ओवर में 1 विकेट।

महली बियर्डमैन ने इंग्लैंड के खिलाफ7.4 ओवर में मात्र 24 रन खर्च कर कुल 6 विकेट चटकाए। उनके इस धाकड़ प्रदर्शन के दम पर इंग्लैंड की पूरी टीम 131 रनों पर ही सिमट गई। महली ने जोफ्रा आर्चर के रूप में अपना 6ठा विकेट लिया।



आईपीएल 2027 मिनी नीलामी के लिए मुस्तफिजुर सहित सात बांग्लादेशी खिलाड़ियों ने नाम दिये



मुम्बई (ईएमएस)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2027 के आगामी मिनी नीलामी में इस बार बांग्लादेश के 7 खिलाड़ी शामिल है। जिसमें एक नाम तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान का भी है। ये वही मुस्तफिजुर रहमान हैं, जो पिछले सत्र में विवादों में रहने के कारण आईपीएल से बाहर कर दिये गये थे। पिछले साल, आईपीएल 2026 से पहले, कोलकाता नाइट राइडर्स ने मुस्तफिजुर को अपनी टीम में शामिल किया था। हालांकि, बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमलों की खबरों के मद्देनजर उपजे विरोध प्रदर्शनों के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के हस्तक्षेप के बाद, फ्रेंचाइजी ने सीजन की शुरुआत से पहले ही मुस्तफिजुर को बाहर कर दिया था। इस घटना ने दोनों देशों के क्रिकेट संबंधों में काफी खटास पैदा कर दी थी और एक बड़ा राजनीतिक-सामाजिक विवाद खड़ा हो गया था। इस घटना के बाद बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) की तरफ से भी कड़ी प्रतिक्रिया देखने को मिली थी। भारत द्वारा 2026 टी20 विश्व कप की मेजबानी का बांग्लादेश ने बहिष्कार किया था।

अब, लगभग दस महीने बाद हालातों में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। आगामी आईपीएल 2027 सीजन के लिए 16 दिसंबर को होने वाले मिनी निलामी के लिए बीसीसीआई ने विभिन्न क्रिकेट बोर्ड्स से खिलाड़ियों की सूची मांगी थी, जिसमें बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड भी शामिल रहा। ऐसे में एक रिपोर्ट के अनुसार, बांग्लादेश के सात खिलाड़ियों ने इस नीलामी के लिए अपना नाम पंजीकृत कराया है। इसमें मुस्तफिजुर रहमान के अलावा, नाहिद राणा, रिशाद हुसैन, हसन महमूद, तौहीद हृदोय, तस्कीन अहमद और शोरफुल इस्लाम शामिल हैं।आईपीएल प्रबंधन की तरफसे नीलामी में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों की आधिकारिक सूची अभी जारी नहीं की गई है। इस सूची को जारी होने में अभी कुछ वक्त लगेगा, क्योंकि सभी 10 फ्रेंचाइजी पहले अपने रिटेन किए गए खिलाड़ियों की सूची जारी करेंगी और रिलीज किए गए खिलाड़ी भी ऑक्शन पूल का हिस्सा बनेंगे।

चीन में पहली बार खेली जाएगी लीजेंड्स टी20 क्रिकेट लीग



बीजिंग (ईएमएस)। चीन में पहली बार क्रिकेट लीग शुरु होने जा रही है। इससे देश में क्रिकेट को व्यापक पहचान मिलने की उम्मीद है। विश्व चैंपियनशिप ऑफ क्रिकेट (डब्ल्यूसीसी) ने चीन के डोंग्यूहुई स्पोर्ट्स के साथ मिलकर देश की अपनी तरह की पहली फ्रेंचाइजी आधारित लीजेंड्स टी20 लीग शुरू करने की घोषणा की है। आठ टीमों वाली इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता का पहला संस्करण मई 2027 में आयोजित किया जाएगा, जिसमें अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के कई दिग्गज पूर्व क्रिकेटर भाग लेंगे। यह कदम चीन में क्रिकेट के विस्तार और विकास के लिए बेहद अहम माना जा रहा है, जो खेल को एक नए बाजार में स्थापित करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। वहीं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा क्रिकेट के लिए नए बाजारों की तलाश और लॉस एंजिलिस 2028 ओलंपिक खेलों में क्रिकेट की वापसी को देखते हुए भी इस लीग का महत्व बढ़ जाता है। खेल जानकारों का मानना है कि यह लीग चीन में क्रिकेट के विकास को गति देने और खेल को नए दर्शकों तक पहुंचाने में निर्णायक भूमिका निभाएगी। इस महत्वाकांक्षी पहल की नींव अक्टूबर 2026 में डब्ल्यूसीसी और डोंग्यूहुई स्पोर्ट्स के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) से रखी गई थी। गौरतलब है कि डोंग्यूहुई स्पोर्ट्स, जियांग्सू प्रांत के ताइचांग स्थित शाक्सी टाउन क्रिकेट सेंटर का संचालन करता है, जो अपनी स्थानीय विशेषज्ञता और उत्कृष्ट खेल सुविधाओं के माध्यम से चीन के बढ़ते खेल बाजार तक विश्वस्तरीय क्रिकेट पहुंचाने में सहायक साबित होगा। वहीं, डब्ल्यूसीसी का संचालन अनुभवी प्रमोटर्स द्वारा किया जा रहा है, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय फ्रेंचाइजी आधारित खेल प्रतियोगिताओं के विकास और संचालन का व्यापक अनुभव है।

रंग संसार

सलमान की मातृभूमि के ट्रेलर में दिखा दमदार एक्शन



बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान की आगामी फिल्म मातृभूमिः मे वॉर रेस्ट इन पीस का ट्रेलर जारी हो गया है। फिल्म में देशभक्ति, सैनिकों के बलिदान और युद्ध के मानवीय पहलुओं को दिखाया गया है। ट्रेलर में सलमान खान एक ऐसे सैनिक की भूमिका में नजर आ रहे हैं, जो देश की रक्षा के लिए हर चुनौती का सामना करने को तैयार है। फिल्म में एक्शन के साथ भावनात्मक दृश्यों को भी प्रमुखता दी गई है। ट्रेलर की शुरुआत दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्रों में शामिल एक बर्फीले इलाके से होती है। यहां हिमस्खलन के खतरनाक दृश्य दिखाई देते हैं। इसी बीच चीनी सैनिक वास्तविक नियंत्रण रेखा के भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की तैयारी करते नजर आते हैं। इसके बाद सलमान खान की दमदार एंट्री होती है। वह एक अनुभवी और बहादुर सैनिक के किरदार में दिखाई देते हैं, जिसमें ताकत के साथ समझदारी भी नजर आती है। ट्रेलर में सलमान की निजी जिंदगी की झलक भी दिखाई गई है। अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह फिल्म में उनकी पत्नी की भूमिका निभा रही हैं। वह अपने पति को सैन्य मिशन पर भेजे जाने को लेकर चिंतित नजर आती हैं। इस दौरान सलमान उन्हें समझाते हैं कि वास्तविक नियंत्रण रेखा पर होने वाला आमना-सामना हमेशा गोलीबारी वाली लड़ाई नहीं होता। दोनों देशों के बीच हुए समझौतों का उद्देश्य सैन्य तनाव को बड़े युद्ध में बदलने से रोकना है। फिल्म में सैनिकों की जिंदगी और उनके परिवारों की भावनाओं को भी दिखाया गया है।

देश की सुरक्षा में तैनात जवानों के लिए ड्यूटी सबसे पहले होती है, लेकिन इसके साथ ही उनके परिवारों को भी कई तरह के भावनात्मक संघर्षों से गुजरना पड़ता है। ट्रेलर में दिखाया गया है कि सैनिकों के लिए परिवार के साथ बिताया गया हर पल कितना कीमती होता है। सलमान खान अपने एक्शन अवतार में प्रभावशाली नजर आ रहे हैं।

अभिनेत्री रसिका दुग्गल ने बच्चों के लिए अर्थपूर्ण फिल्में बनाने की अपील की

कहा- बालमन की जिज्ञासा को अपनाना जरूरी



मुंबई (यशभारत)। भारतीय सिनेमा की प्रतिभावान अभिनेत्री रसिका दुग्गल ने बच्चों के मानसिक विकास और मनोरंजन के लिए विशेष रूप से बनाई जाने वाली फिल्मों की आवश्यकता पर बल दिया है। उनका मानना है कि लिटिल थॉमस जैसी फिल्में बच्चों के लिए बेहद महत्वपूर्ण और प्रासंगिक हैं, क्योंकि ऐसी कहानियां बाल दर्शकों को अपने खुद के व्यक्तिगत अनुभवों, मासूम भावनाओं और संवेदनाओं से सीधे तौर पर जोड़ने का अवसर प्रदान करती हैं। इस फिल्म में वे जेसी मिरांडा नामक एक माँ का मुख्य किरदार निभा रही हैं। अभिनेत्री का कहना है कि इस प्रकार का सिनेमा बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें सवाल पूछने, रचनात्मक कल्पना करने और अपने आसपास की विशाल दुनिया को अपनी समझ के अनुसार परखने की पूरी आजादी देता है। बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण सिनेमा की जरूरत पर विस्तार से बात करते हुए रसिका दुग्गल ने कहा कि सिनेमा किसी भी व्यक्ति की दुनिया को विस्तार देने और उसकी कल्पनाशीलता को नई उड़ान देने का एक बेहद सशक्त माध्यम है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इंसान के बड़े होने पर उसके मन में जो तमाम तरह के विचार और दृष्टिकोण विकसित होते हैं, उनका गहरा संबंध अक्सर बचपन के दिनों में देखी गई फिल्मों और कहानियों से होता है। इसी वजह से फिल्म उद्योग को ऐसी कहानियों का निर्माण अधिक से अधिक करना चाहिए, जिनसे बच्चे खुद को भावनात्मक रूप से जोड़ सकें। उन्होंने कहा कि निर्माताओं को बच्चों की सहज जिज्ञासा को नजरअंदाज करने के बजाय उसे खुले दिल से अपनाना चाहिए। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए अभिनेत्री ने स्पष्ट किया कि बच्चों के लिए बनाई जाने वाली फिल्में बिना हल्की-फुल्की या सतही हुए भी बेहद मनोरंजक हो सकती हैं। उन्होंने देश भर के फिल्म निर्माताओं से अपील की कि वे बाल दृष्टिकोण वाली ऐसी कहानियों की खोज करें और उन पर काम करें, जिन्हें बच्चे न केवल खुशी-खुशी देख सकें बल्कि वे कहानियां उनकी रचनात्मक कल्पना शक्ति के लिए नए-नए दरवाजे भी खोलें। कौशल ओझा के निर्देशन में बनी फिल्म लिटिल थॉमस 1990 के दशक के सुंदर राज्य गोवा की पृष्ठभूमि पर आधारित है। यह सात साल के मासूम बच्चे थॉमस और उसके परिवार के जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव को बड़ी ही खूबसूरती से दर्शाती है, जिसकी शैली दर्शकों को मालगुडी डेज और रस्किन बॉन्ड की अमर कहानियों की याद दिलाती है। फिल्म में गुलशन देवैया, रसिका दुग्गल और बाल कलाकार हृदांश पारेख ने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं।



रामायण देखकर निराश हुए नीतीश भारद्वाज, फिल्म की तारीफ वापस लेने का किया ऐलान

टीवी धारावाहिक महाभारत में भगवान कृष्ण की भूमिका निभाकर लोकप्रियता हासिल करने वाले अभिनेता नीतीश भारद्वाज फिल्म रामायण देखकर निराश हो गए हैं। उन्होंने फिल्म को लेकर पहले की गई अपनी तारीफवापस लेने की घोषणा की है। अभिनेता का कहना है कि रामायण केवल मनोरंजन की कहानी नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सभ्यतागत विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऐसे में इसके पात्रों और उनके मूल चरित्र को अपनी सुविधा के अनुसार बदलकर प्रस्तुत करना उचित नहीं है। नीतीश भारद्वाज ने सोशल मीडिया पर अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि रामायण भारतीय संस्कृति और चेतना में गहराई से बसी हुई है। इसके नायक, नायिका और खलनायक सभी के चरित्र इस महाकाव्य के मूल संदेश और नैतिक मूल्यों से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा, परंपराओं को बनाए रखने और मर्यादा की स्थापना के लिए राम अवतार लिया था। ऐसे में फिल्म में रावण को असाधारण रूप से उदार, सामाजिक रूप से न्यायप्रिय और निष्पक्ष दिखाना उन्हें पसंद नहीं आया। अभिनेता के मुताबिक, इस तरह का चित्रण रामायण के मूल नैतिक आधार को प्रभावित करता है। इससे भगवान राम के अवतार लेने के उद्देश्य और कहानी के मूल संदेश की महत्ता भी कमजोर हो सकती है।

दिवाली पार्टी में साथ दिखे हिना खान और राजन शाही

मुंबई (ईएमएस)। टीवी अभिनेत्री हिना खान और मशहूर निर्माता राजन शाही की एक तस्वीर इन दिनों सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बनी हुई है। दिवाली पार्टी के दौरान दोनों एक ही फ्रेम में नजर आए और साथ में कैमरे के लिए पोज भी दिए। लंबे समय बाद दोनों को इस तरह साथ देखकर प्रशंसक हैरान हैं। तस्वीर सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर सवाल उठने लगे हैं कि क्या दोनों के बीच सालों से चली आ रही नाराजगी अब खत्म हो गई है? यह तस्वीर राजन शाही की बेटी इशिका ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर साझा की है। इसमें हिना खान और राजन शाही के साथ कई अन्य लोग भी दिखाई दे रहे हैं। दोनों के एक साथ नजर आने पर कुछ प्रशंसकों ने खुशी जताई, जबकि कई लोग उनके रिश्तों में सुधार को लेकर सवाल पूछ रहे हैं। हालांकि, इस मुलाकात को लेकर अभी तक हिना या राजन की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

हिना खान और राजन शाही के बीच पुराने मतभेदों की चर्चा काफी समय से होती रही है। हिना ने राजन शाही के लोकप्रिय धारावाहिक 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' में अक्षरा का मुख्य किरदार निभाया था।



करीब आठ साल तक इस शो का हिस्सा रहने के दौरान उन्होंने घर-घर में पहचान बनाई। बाद में हिना ने अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए शो छोड़ने का फैसला किया था। वर्ष 2024 में एक इंटरव्यू के दौरान हिना ने शो छोड़ने के अनुभव पर बात की थी। उन्होंने कहा था कि वह शो के निर्माताओं का सम्मान करती हैं, लेकिन उनका शो से अलग होना अच्छे माहौल में नहीं हुआ था। उनके इस बयान के बाद पुराने विवाद ने फिर सुर्खियां बटोरी थीं। दूसरी ओर, राजन शाही ने भी एक इंटरव्यू में हिना के साथ हुए विवाद पर अपनी बात रखी थी। उन्होंने आरोप लगाया था कि हिना शो की स्क्रिप्ट में काफी दखल देती थीं, जिससे सेट पर परेशानियां होती थीं। राजन के मुताबिक, एक बार हिना ने शिवांगी जोशी के किरदार नायरा के समर्थन में कुछ संवाद बोलने से इनकार कर दिया था। इसके बाद मेकर्स ने उनका कॉन्ट्रैक्ट खत्म कर दिया था और उन्हें सेट छोड़ने के लिए कहा गया था। अब दिवाली पार्टी की तस्वीर ने दोनों के पुराने विवाद को फिर चर्चा में ला दिया है। हालांकि, साथ में तस्वीर खिंचवाने से यह स्पष्ट नहीं होता कि उनके बीच मतभेद पूरी तरह खत्म हो गए हैं।

68 करोड़ की सड़क : चार दिन में उखड़ने लगी गिट्टी

नगर के अंदर ओटीआई सड़क के स्लैब की हालत खराब, किनारों पर डाली जा रही लाल मिट्टी

पवई, यशभारत। पवई नगर में सलेहा तिराहा से अस्पताल मार्ग तक किया जा रहा ओटीआई (वन टाइम इम्प्रूवमेंट) सड़क चौड़ीकरण एवं सुधार कार्य गुणवत्ता की कसौटी पर खरा उतरता नजर नहीं आ रहा है। करीब 68 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली सड़क निर्माण परियोजना में निर्माण सामग्री की गुणवत्ता को लेकर सवाल खड़े होने लगे हैं। हालात यह हैं कि नगर के अंदर कार्यालयों और गलियों तक जाने वाले मार्गों पर बनाए गए सीमेंट कंक्रीट के स्लैब चार दिन बाद ही खराब होने लगे हैं। स्लैब की सतह से गिट्टी उखड़ने लगी है, जिससे निर्माण कार्य में इस्तेमाल की जा रही सामग्री और निर्धारित तकनीकी मापदंडों को लेकर सवाल उठ रहे हैं। पवई बाईपास और चांदा घाटी री-अलाइनमेंट सहित 11.65 किलोमीटर लंबे मुख्य सड़क खंड तथा नगर के अंदर किए जा रहे सुधार कार्य (ओटीआई) की कुल अनुमानित लागत करीब 68 करोड़ रुपये है। इस परियोजना का निर्माण कार्य मेसर्स रवि शंकर जायसवाल कंपनी द्वारा कराया जा रहा है। इतनी बड़ी लागत की परियोजना में नगर के अंदर हो रहे निर्माण कार्य की शुरुआती हालत ही गुणवत्ता को लेकर चिंता पैदा कर रही है। निर्माण कार्य में कथित तौर पर अमानक सामग्री के उपयोग की शिकायतें सामने आ रही हैं। नगर के अंदर कार्यालयों और गलियों की ओर जाने वाले स्थानों पर बनाए गए सीमेंट कंक्रीट के स्लैब की स्थिति यह है कि चार दिन बाद ही उनकी ऊपरी सतह से गिट्टी उखड़ने लगी है। इससे सीमेंट, रेत और गिट्टी के निर्धारित अनुपात के साथ ही कंक्रीट की गुणवत्ता की जांच की आवश्यकता महसूस होने लगी है। वहीं सड़क के किनारों पर साइड सोल्डर के नाम पर लाल मिट्टी डाली जा रही है। नगर के आबादी वाले और व्यस्त हिस्से में इस तरह मिट्टी का उपयोग किए जाने से भविष्य में धूल, कीचड़ और जलभराव की समस्या खड़ी होने की आशंका है। बारिश के दौरान मिट्टी बहने और



सड़क के किनारों पर पानी जमा होने से सड़क की मजबूती प्रभावित होने के साथ दुर्घटनाओं का खतरा भी बढ़ सकता है।

सड़क की मजबूती से जुड़ा है साइड सोल्डर

सीसी सड़क के किनारों का निर्माण केवल सड़क की चौड़ाई पूरी करने के लिए नहीं होता, बल्कि सड़क के किनारों को मजबूती देने और वाहनों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नगर के आबादी वाले हिस्सों में स्वीकृत तकनीकी डिजाइन और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार पक्के शोल्डर, नाली, फुटपाथ अथवा निर्धारित मानकों के अनुरूप किनारों का निर्माण किया जाना चाहिए। ऐसे में सड़क के किनारों पर इस्तेमाल की जा रही सामग्री और उसके उचित संपीड़न की जांच जरूरी है।

68 करोड़ की परियोजना, फिर भी गुणवत्ता पर सवाल

करीब 68 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली इस परियोजना में निर्माण की गुणवत्ता सुनिश्चित करना संबंधित विभाग और निर्माण एजेंसी की जिम्मेदारी है। यदि निर्माण के महज चार दिन बाद ही स्लैब से गिट्टी उखड़ने लगी है तो निर्माण सामग्री, कंक्रीट के मिश्रण और निर्माण प्रक्रिया की तकनीकी जांच कराई जानी चाहिए। सवाल यह भी है कि निर्माण कार्य के दौरान विभागीय इंजीनियरों द्वारा नियमित निरीक्षण और गुणवत्ता परीक्षण किया जा रहा है या नहीं। नगरवासियों ने संबंधित विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से निर्माण कार्य की निष्पक्ष तकनीकी जांच कराने, स्लैब के नमूने लेकर गुणवत्ता परीक्षण कराने तथा निर्धारित मापदंडों के विपरीत निर्माण पाए जाने पर ठेका कंपनी के विरुद्ध कार्रवाई करने की मांग की है। लोगों का कहना है कि करोड़ों रुपये की लागत से बन रही सड़क कुछ ही दिनों में खराब होने लगे तो सरकारी धन खर्च करने का उद्देश्य ही अधूरा रह जाएगा।

नियुक्तियों से लेकर प्रशिक्षण, रोजगार और पीएफ-ईएसआईसी भुगतान तक की होगी पड़ताल

कटनी, यशभारत। नगर निगम में राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के तहत संचालित शहरी आजीविका केंद्र (सीएलसी) की कार्यप्रणाली अब जांच के दायरे में आ गई है। केंद्र के संचालन, वित्तीय लेन-देन, कर्मचारियों की नियुक्तियों और मानव संसाधन उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं की चयन प्रक्रिया को लेकर निगमायुक्त तपस्या परिहार ने जांच समिति गठित की है। समिति को 15 दिन के भीतर तथ्यात्मक जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। जांच का दायरा केवल केंद्र के मौजूदा संचालन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि गठन से लेकर अब तक की पूरी गतिविधियों और वित्तीय रिकॉर्ड को खंगाला जाएगा। समिति यह भी जांचेगी कि केंद्र के लिए प्राप्त राशि कितनी थी, कहां और किन कार्यों में खर्च की गई तथा स्वीकृत कार्यों के अनुरूप राशि का वास्तविक उपयोग हुआ या नहीं।

नियुक्तियों और भुगतान पर भी नजर

जांच में मानव संसाधन उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं के चयन, विज्ञापन, अनुबंध और उसकी शर्तों की पड़ताल होगी। नियुक्त कर्मचारियों की शैक्षणिक एवं तकनीकी योग्यता, अनुभव, चयन प्रक्रिया और पुलिस सत्यापन के रिकॉर्ड भी जांचे जाएंगे। कर्मचारियों को मिलने वाले पारिश्रमिक, पीएफ और ईएसआईसी की कटौती तथा समय पर भुगतान हुआ या नहीं, इसका भी परीक्षण किया जाएगा। इसके अलावा प्रशिक्षण कार्यक्रमों,



प्रशिक्षित हितग्राहियों की संख्या और उन्हें वास्तव में रोजगार उपलब्ध कराने की स्थिति का आकलन होगा। केंद्र में उपलब्ध फर्नीचर, सामग्री, कार्यों और नियंत्रण व्यवस्था की वास्तविक स्थिति भी देखी जाएगी। पूर्व में गठित जांच समिति की रिपोर्ट पर हुई कार्रवाई और अब तक प्राप्त शिकायतों को भी जांच में शामिल किया गया है।

पांच सदस्यीय समिति करेगी जांच

उपायुक्त प्रियंका झारिया को समिति का अध्यक्ष बनाया गया है। कार्यपालन यंत्री अंशुमान सिंह, सहायक यंत्री अनिल जायसवाल और कार्यालय अधीक्षक नागेंद्र पटेल सदस्य होंगे, जबकि सहायक ग्रेड-3 दीपक रावत सदस्य सचिव की जिम्मेदारी संभालेंगे। अब निगाहें 15 दिन बाद आने वाली जांच रिपोर्ट पर रहेंगी। महत्वपूर्ण सवाल यह होगा कि जांच में केवल दस्तावेजों का परीक्षण होगा या वित्तीय और प्रशासनिक स्तर पर सामने आने वाली कमियों के लिए जिम्मेदारी भी तय की जाएगी।

प्रारूप मतदाता सूची में 9.64 लाख मतदाता दर्ज

11 दिसंबर तक दावे-आपत्तियां, चार दिन लगेंगे विशेष कैंप

4 जनवरी को प्रकाशित होगी अंतिम सूची

कटनी, यशभारत। *जिले में मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण-2027 के तहत 12 नवंबर को प्रारूप मतदाता सूची प्रकाशित कर दी गई। इसमें जिले के कुल 9 लाख 64 हजार 502 मतदाता दर्ज हैं। अब मतदाता 11 दिसंबर तक नाम जुड़वाने, संशोधन कराने और अपात्र नामों पर आपत्ति दर्ज करा सकेंगे।*



प्रारूप सूची में 4 लाख 98 हजार 97 पुरुष, 4 लाख 66 हजार 389 महिला और 16 अन्य मतदाता शामिल हैं। विधानसभा क्षेत्रवार बड़वारा में 2,52,082, विजयराघवगढ़ में 2,34,932, मुड़वारा में 2,34,420 और बहोरीबंद में 2,43,068 मतदाता दर्ज हैं।

चार दिन विशेष कैंप- मतदाताओं की सुविधा के लिए 21-22 नवंबर और 5-6 दिसंबर को विशेष कैंप लगाए जाएंगे। अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 4 जनवरी 2027 को होगा। जिले के चार विधानसभा क्षेत्रों में कुल 1239 मतदान केंद्र हैं। राजनीतिक दलों से प्रत्येक बूथ पर बूथ लेवल एजेंट (बीएलए) नियुक्त करने की अपील की गई है। अब तक भाजपा के 1153 और कांग्रेस के 1168 बीएलए की जानकारी प्राप्त हुई है। कलेक्ट्रेट में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी आशीष तिवारी की अध्यक्षता में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की बैठक हुई। इसमें कांग्रेस के शहरी जिलाध्यक्ष अमित शुक्ला सहित विभिन्न दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे। कलेक्टर ने पात्र मतदाताओं के नाम सूची में शामिल कराने के लिए सहयोग की अपील की।

ईवीएम स्ट्रांग रूम का निरीक्षण- कलेक्टर ने निर्वाचन सदन स्थित ईवीएम वेयरहाउस का भी निरीक्षण किया। उन्होंने ईवीएम और वीवीपैट की सुरक्षा, सील एवं अभिलेखों की जांच की। निरीक्षण के बाद निर्धारित प्रक्रिया के तहत वेयरहाउस को पुनः सीलबंद किया

पंगु हो चुका जिला प्रशासन

बरही हादसे पर पूर्व शहर कांग्रेस के तल्ख़ आरोप, 20 लाख मुआवजे की मांग

कटनी, यशभारत। नगर निगम के वरिष्ठ पार्षद एवं जिला शहर कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष मिथिलेश जैन एडवोकेट ने बरही में हुई अग्नि दुर्घटना में 6 लोगों की मृत्यु होना को अत्यंत दुखद घटना बतलाया है। उन्होंने कहा है कि जिला प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा समय पर फोन ना उठाना, समय पर स्थल पर न पहुंचना, अग्निशमन वाहन की पर्याप्त व्यवस्था न होना, इस बात का संकेत है कि जिला प्रशासन पंगु हो चुका है और मानव जीवन की रक्षा करने से उसे कोई मतलब नहीं है। केवल फोटो खिंचवाने और जनसंपर्क कार्यालय के माध्यम से खबरें भिजवाकर झूठी वाहवाही लूटने में व्यस्त रहता है। मध्यप्रदेश शासन से अपेक्षित है कि दोषी व्यक्तियों पर कठोर कार्रवाई की जाए तथा दिवंगत व्यक्तियों के परिजनों को 20-20 लाख की सहायता राशि की जाए।



रंगोली के रंगों में सजी भारतीय संस्कृति और परंपराओं की झलक

साईनाथ इंस्टीट्यूशन में बीएड के छात्र-छात्राओं ने उत्साह के साथ लिया प्रतियोगिता में हिस्सा

कटनी, यशभारत। साईनाथ इंस्टीट्यूशन मुरवारा में 5 नवंबर को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें बीए-बीएड एवं बीएससी-बीएड के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक सोच और कलात्मक प्रतिभा को रंगों के माध्यम से प्रदर्शित करते हुए भारतीय संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक संदेशों को रंगोली के रूप में साकार किया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों और आकर्षक डिजाइनों पर आधारित रंगोलियां बनाईं। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के शिक्षकों ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। आयोजन में श्री हॉस्पिटल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स सोसाइटी द्वारा संचालित साईनाथ इंस्टीट्यूशन के





चेयरमैन डॉ. दीपक सक्सेना, सेक्रेट्री डॉ. शोभना सक्सेना, डायरेक्टर आमोद सक्सेना, डायरेक्टर स्वाति सक्सेना, डायरेक्टर डॉ. शांभवी सक्सेना तथा महाविद्यालय के ज्वाइंट डायरेक्टर दीपक माथुर सहित समस्त शिक्षक उपस्थित रहे। अतिथियों ने विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा और उत्साह की सराहना की।

नकली धान बीज ने किसानों की मेहनत पर फेरा पानी

बड़वारा के रोहनिया हार में 13 एकड़ की फसल बर्बाद

कटनी, यशभारत। बड़वारा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले रोहनिया हार में किसानों पर कुदरत की मार नहीं, बल्कि नकली और घटिया बीज की मार पड़ी है। दर्जनों किसानों की धान की पूरी फसल बर्बाद हो जाने का गंभीर मामला सामने आया है। किसानों का आरोप है कि उन्होंने स्थानीय स्तर पर स्थित खाद-बीज भंडार' से '2355' किस्म का धान बीज खरीदा था। पिछले करीब तीन महीनों से दिन-रात खेतों में पसीना बहाकर फसल की सींच-संभाल करने वाले किसानों के अरमान उस वक्त ध धरे रह गए जब कटाई का समय आया। खेतों में लहलहाती फसल के पौधों में धान की बालियां ही नहीं आईं, जिससे किसानों की लगभग 13 एकड़ की पूरी फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई।



प्रभावित किसान

इस भारी नुकसान से जूझने वाले अन्नदाताओं में प्रमुख रूप से कमला कचेर, राकेश कचेर, ओमप्रकाश कचेर,होरीलाल कचेर, संदीप कचेर, सोनेलाल कचेर, लखु कचेर शामिल है। किसानों का आरोप है कि जब उन्होंने अपनी बर्बादी की दास्तां और बीज की खराब गुणवत्ता को लेकर 'अंकित बीज भंडार' के संचालक से बात की, तो दुकानदार ने बेहद गैर-जिम्मेदाराना और लापरवाह रवैया अपनाते हुए कहा– 'तुमको जहां शिकायत करना है, तुम कर लो, अब हम क्या करें।' दुकानदार के इस बेतुके जवाब ने किसानों के जख्मों पर नमक छिड़कने का काम किया है।

किसानों की प्रमुख मांगें

तीन महीने की कड़ी मेहनत, खाद, पानी और जुताई की लागत गंवा चुके किसानों ने प्रशासन और कृषि विभाग से सख्त कार्रवाई की गुहार लगाई है। किसानों की मांग है कि संबंधित खाद-बीज भंडार के खिलाफ तत्काल उच्चस्तरीय जांच बैठाकर कानूनी कार्रवाई की जाए। कृषि विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचकर फसल के नुकसान का आकलन करें। प्रभावित किसानों को इस भारी आर्थिक नुकसान का उचित मुआवजा दिलाया जाए। आखिर अपनी गाढ़ी कमाई और महीनों की मेहनत गंवाने वाले इन बेबस किसानों की जिम्मेदारी कौन लेगा? क्या कृषि विभाग और स्थानीय प्रशासन ऐसे लापरवाह बीज विक्रेताओं पर शिकंजा कसेगा?

पंप हाउस के पास 5 दिनों से फटी पाइपलाइन

हजारों लीटर पानी बर्बाद, राहगीर और रहवासी परेशान

कटनी, यशभारत। शहर के बरगवां रोड इलाकों में एलआईसी कार्यालय के पीछे स्थित योजना क्रमांक 3 के पंप हाउस के पास पाइपलाइन पिछले पांच दिनों से फटी हुई है। पाइपलाइन क्षतिग्रस्त होने के कारण रोजाना हजारों लीटर पीने का साफ पानी सड़कों पर व्यर्थ बह रहा है। लगातार जल रिसाव से आस पास कीचड़ और जलभराव की स्थिति बन गई है, जिससे रहवासियों और राहगीरों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि पाइपलाइन फटने की सूचना नगर निगम के संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को दी जा चुकी है, लेकिन पांच दिन बीत जाने के बाद भी मरम्मत कार्य शुरू नहीं किया गया है। एक ओर जहां शहर के कई हिस्सों में पेयजल संकट की स्थिति बनी रहती है, वहीं दूसरी ओर जिम्मेदार अमले की उदासीनता के चलते कीमती पानी यूं ही नालियों में बह रहा है।



घरों में कम दबाव से आ रहा पानी

पंप हाउस के पास लगातार पानी बहने के कारण सड़क पर फिसलन बढ़ गई है, जिससे दोपहिया वाहन चालकों और पैदल चलने वाले राहगीरों के गिरने का खतरा बना हुआ है। इसके साथ ही पाइपलाइन लीकेज होने से आसपास के घरों में नलों का प्रेशर भी कम हो गया है, जिससे लोगों को पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। क्षेत्रवासियों ने नगर निगम प्रशासन से मांग की है कि तत्काल तकनीकी अमला भेजकर क्षतिग्रस्त पाइपलाइन की मरम्मत कराई जाए, ताकि पानी की बर्बादी रुक सके और लोगों को राहत मिले।

कुपोषण के खिलाफ स्वास्थ्य तंत्र कितना तैयार

कलेक्टर ने बहोरीबंद अस्पताल में परखी व्यवस्थाएं



कटनी, यशभारत। जिले में कुपोषण की चुनौती से निपटने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की जमीनी स्थिति क्या है और अस्पतालों में मरीजों को किस तरह की सुविधाएं मिल रही हैं, इसे परखने कलेक्टर आशीष तिवारी ने बहोरीबंद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्वास्थ्य सुविधाओं, उपचार व्यवस्था और दवाओं की उपलब्धता का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने गर्भवती महिलाओं की नियमित स्वास्थ्य जांच सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि गर्भावस्था के दौरान समय पर जांच और आवश्यक उपचार मिलने से मां और बच्चे दोनों के स्वास्थ्य की बेहतर देखभाल हो सकती है। इसके साथ ही कुपोषित बच्चों की पहचान कर उन्हें समय पर बेहतर उपचार उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने अस्पताल में दवाओं की उपलब्धता और मरीजों को दी जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की भी जानकारी ली। उन्होंने संबंधित स्वास्थ्य अधिकारियों को निर्देशित किया कि उपचार के लिए आने वाले मरीजों को आवश्यक सुविधाएं समय पर मिलें और स्वास्थ्य सेवाओं में किसी तरह की लापरवाही न हो।

95 ट्रांसपोर्टरों को अंतिम नोटिस

15 जनवरी 2027 तक कारोबार शिफ्ट करने की चेतावनी, 43 साल पुरानी योजना को जमीन पर उतारने की कवायद

कटनी, यशभारत। शहर की सड़कों और व्यस्त बाजारों में भारी वाहनों की आवाजाही, सड़क किनारे होने वाली लोडिंग-अनलोडिंग और बार-बार लगने वाले जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए नगर निगम ने सख्त रुख अपना लिया है। 43 साल पुरानी ट्रांसपोर्ट नगर योजना को धरातल पर उतारने के लिए निगम प्रशासन ने शहर के 95 ट्रांसपोर्ट कारोबारियों को अंतिम नोटिस जारी किया है। इन सभी कारोबारियों को 15 जनवरी 2027 तक हर हाल में पुरैनी स्थित 'कुशाभाऊ ठाकरे ट्रांसपोर्ट नगर' में अपना व्यवसाय शिफ्ट करने की चेतावनी दी गई है।

तय समयसीमा के बाद होगी वैधानिक कार्रवाई

नगर निगम के राजस्व अधिकारी द्वारा जारी नोटिस के बाद ट्रांसपोर्ट कारोबारियों में हड़कंप की स्थिति है। निगम प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि शहर में संचालित ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को पुरैनी ट्रांसपोर्ट नगर में स्थानांतरित करने के लिए पूर्व में ही भूखंड आवंटित किए जा चुके हैं। इसके बावजूद कारोबारी शहर के भीतर ही व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। निगम ने दो टूक कहा है कि यदि 15 जनवरी 2027 की निर्धारित समयसीमा के बाद भी शहर में ट्रांसपोर्ट व्यवसाय संचालित होता पाया



गया, तो संबंधित कारोबारियों के खिलाफ नियमानुसार कड़ी वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

7 करोड़ रुपये खर्च, फिर भी अधूरी है योजना

शहर में बढ़ते यातायात दबाव और भारी वाहनों की आवाजाही को नियंत्रित करने के उद्देश्य से वर्ष 1983-84 में ट्रांसपोर्ट कारोबार को शहर से बाहर स्थापित करने की योजना बनाई गई थी। इसके बाद वर्ष 2012 में पुरैनी में ट्रांसपोर्ट कारोबारियों को भूखंड आवंटित किए गए। नगर निगम ने यहां सड़क, बिजली, पानी और स्ट्रीट लाइट जैसी मूलभूत सुविधाओं के विकास पर करीब 7 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। बावजूद इसके, करीब 14 साल गुजरने के बाद भी अधिकांश कारोबारी वहां नहीं पहुंचे और पुराने ठिकानों से ही व्यवसाय जारी रखा, जिससे योजना का मूल उद्देश्य अधूरा रह गया।

19 कारोबारियों की लीज पहले ही हो चुकी है निरस्त

नगर निगम के आंकड़ों के अनुसार, पुरैनी ट्रांसपोर्ट नगर में कुल 114 ट्रांसपोर्टरों को लीज पर भूखंड आवंटित किए गए थे। इनमें से नियमों का पालन नहीं करने वाले 19 कारोबारियों की लीज पहले ही निरस्त की जा चुकी है। अब शेष बचे 95 कारोबारियों को अंतिम नोटिस जारी करते हुए शिफ्टिंग की अंतिम समयसीमा तय की गई है।

आम लोगों को जाम और परेशानी से मिलेगी राहत

वर्तमान में शहर के विभिन्न इलाकों में ट्रांसपोर्ट कारोबार संचालित होने से भारी वाहनों का दबाव बना रहता है और कई स्थानों पर सड़क किनारे ही माल चढ़ाने और उतारने का काम किया जाता है। इससे सड़क की चौड़ाई कम हो जाती है और व्यस्त मार्गों व बाजार क्षेत्रों में जाम की स्थिति बनती है।

स्वामी,प्रकाशक, मुद्रक आशीष कुमार शुक्ला, पी.जी.इंफ्रास्टचर एंड सर्विस प्रा.लि. राऊखेड़ी देवास रोड,इंदौर (मप्र) से मुद्रित एवं 22/1,पगनिसपागा पालसिकर कॉलोनी बालनिकेतन स्कूल के पास , इंदौर (म.प्र) 452007 से प्रकाशित | संपादक अम्बरीष तिवारी * प्रबंध संपादक अमरीश पचोरिया*, सलाहकार संपादक श्याम कटारे RNI No .MPHIN/26/A1896 फ़ोन - 9111201000 email - indoreyashbharat@gmail.com , (*पी.आर.बी.एक्ट के तहत समचार चयन के लिए जिम्मेदार) (न्यायालयीन क्षेत्राधिकार जबलपुर)